बच्चों का इन्द्रधनुष
अप्रैल 2006
10 रुपए

हमारी बात

प्यारे दोस्तों,

तुमने कभी ध्यान दिया है कि आज के युग में विज्ञान की पढ़ाई पर कितना ज़ोर है? जो विज्ञान पढ़ते हैं उन्हें ज्यादा इज़्जत की नजर से देखा जाता है। मां बाप बच्चों से कहते हैं- आगे जाकर विज्ञान के विषय ही लो। कई मां बाप तो बच्चों को जबरदस्ती विज्ञान लेने पर मजबूर करते हैं। बड़े वैज्ञानिकों को बड़ी इज़्ज़त की नज़र से देखा जाता है।

ऐसा क्या है विज्ञान में? क्या मां बाप विज्ञान में बहुत विश्वास करते हैं, जो बच्चों को उसी की ओर धकेलते हैं? सच बात तो यह है कि ज्यादातर लोग असल में केवल मेडिकल या इंजीनियरिंग या कम्प्यूटर बच्चों को इसलिये सिखवाना चाहते हैं क्योंकि इनसे आज ज्यादा पैसे देने वाली नौकरियां निकलती हैं। ऐसे घरों में जहां विज्ञान का या वैज्ञानिकता का कोई आदर नहीं, वहां भी ऐसा ही होता है। विशुद्ध वैज्ञानिक बहुत कम लोग बनना चाहते हैं, केवल उसका इस्तेमाल सीखना चाहते हैं। तो फिर, यह आदर पैसे का हुआ न, विज्ञान का तो नहीं। फिर वही प्रश्न दूसरी तरह से। आखिर विज्ञान का ही आदर क्यों किया जाए? इसका अगर कोई एक सबसे बड़ा कारण है तो यह कि विज्ञान ने ही हमें प्रश्न करना सिखाया, कारण खोजना सिखाया और अपनी समझ को लगातार बेहतर बनाना सिखाया।

हजारों वर्षो से विज्ञान के जरिये हमने बहुत कुछ पाया- चाहे वह आग से खाना पकाना हो, बिजली से घर रोशन करना हो या पदार्थ के सबसे छोटे कण अणु के अंदर घुसकर अंदर की रचना समझना हो। कोई विज्ञान का आदर करे या न करे, उसकी ताकत माने या न माने, उसका घर तो तब भी विज्ञान की देन से ही रोशन होता है। प्रकृति के बड़े बड़े रहस्यों को हम केवल इसी शक्तिशाली औजार के जरिये खोल और समझ पाए हैं- लगातार समझते जा रहे हैं।

लेकिन यह खूबसूरत और शक्तिशाली हथियार जब गलत हाथों में, गलत उद्देश्य के लिये इस्तेमाल हुआ, इसने भयानक विनाश किया- चाहे एटम बम हो या दानवी हथियारों से, या प्रदूषण से। तो यह समझना जरूरी है कि इसका इस्तेमाल किस लिये हो, निर्माण के लिये, सबकी भूख, कष्ट और बीमारी हटाने के लिये, या इंसानों और कुदरत के कब्जे के लिये।

बहुत प्यार सहित
अंशुमाला

बच्चों का इन्द्रधनुष

मासिक, वर्ष 1 , अंक 11, अप्रैल 2006

पत्र व रचना भेजने का पता :
इन्द्रधनुष, हिमाचल ज्ञान विज्ञान समिति,
तीर्थ निवास, इंजन घर, संजौली, शिमला-6
फोनः 0177-2842972, 2640873
फैक्सः 0177-2645072
मोबाइलः 9418000730

पत्रिका लगवाने के लिये इनको लिखें :
भीम सिंह, हिमाचल ज्ञान विज्ञान समिति,
सौली खड्ड, मंडी, हि० प्र० - 175001
फोनः 01905-237478, 9418073190
फैक्सः 01905-237878

एक प्रति का मूल्यः 10 *रुपए*
व्यक्तिगत वार्षिक शुल्कः 120 *रुपए*
संस्थागत वार्षिक शुल्कः 120 *रुपए*
बाहरी देशों में वार्षिक शुल्कः $ 15

इस अंक में...

अंशुमाला गुप्ता द्वारा अखिल भारतीय जन विज्ञान नेटवर्क के लिये प्रकाशित तथा सवितार प्रेस, चंडीगढ़ द्वारा मुद्रित

हिमाचल ज्ञान विज्ञान समिति द्वारा तैयार

चन्दू की चिट्ठी

–होल्गर पुक्क

''हम बस चलने ही वाले हैं।'' भिनभिनाहट के शोर में अध्यापिका की आवाज सुनाई दी। ''बच्चों, ऊपर चढ़ जाओ!''

बच्चों को दुबारा बताने की जरूरत नहीं पड़ी। जल्दी से उन्होंने आखिरी बार विदाई ली और बस में अपनी–अपनी जगह घेरने दौड़ पड़े, जिससे दरवाजों पर हल्की–सी धींगामुश्ती मच गई। हर कोई पहले घुसना चाहता था। यहां तक कि लड़कियां भी।

अकेले चन्दू देर तक अपनी मां की बगल में डोलता रहा। ऐसा लगता था जैसे उसे किसी बात का इन्तजार था।

''जाओ, बेटा,'' उसकी मां ने उसे आगे ठेला और कहा, ''मैं आज रात तुम्हें खत लिखूंगी।''

''तुम भूलोगी तो नहीं?'' चन्दू ने पूछा। ''मैं भी तुम्हें खत लिखूंगा।''

''तुम्हें बहुत लम्बी चिट्ठी लिखने की जरूरत नहीं है। इसमें बहुत समय लगेगा,'' उसकी मां ने सलाह दी। ''बस दो चार पंक्तियां लिख देना। हमें बताना कि तुम्हें शिविर में सबसे अच्छा क्या लगा ..''

''अच्छा, ठीक है!'' चन्दू बोल उठा और हाथ-पैर से टेकते हुए जल्दी-जल्दी पायदान पर चढ़ गया। चलो हो गया! आखिरकार सभी बस में चढ़ गये। बस चालक ने इंजन चालू कर दिया।

एक दिन बाद चन्दू को चिट्ठी मिली। वह टाइप की हुई थी क्योंकि चन्दू अभी तक अपनी मां की लिखावट बहुत अच्छी तरह नहीं पढ़ पाता था। मां ने एक बहुत मजेदार तस्वीर भी बनायी थी। इसमें चन्दू था, गिलहरियों के साथ चीड़ शंकू फेंकने का खेल खेलते हुए।

चन्दू ने चिट्ठी कई बार पढ़ी। तस्वरी में वह अपनी खुद की चपटी नाक, अपनी धारीदार कमीज़ और लाल हाफपैंट को पहचान गया। उसे अच्छी तरह याद था कि कब उसकी मां ने यह पैण्ट बनाया था। और उसके पिता ने उसके लिए धारीवाली कमरपेटी खरीदी थी।

चन्दू ने बहुत कोमलता से पैण्ट पर हाथ फिराया, कमरपेटी का स्पर्श किया और जवाब लिखने बैठ गया। इसे संक्षिप्त होना चाहिए। उसे अपनी मां को इस ग्रीष्म शिविर की सबसे रोमांचक घटना के बारे में बताना था।

आखिर वह लिखे तो क्या लिखे?

झंडे का फहराना या हल्ला-गुल्ला, मौज-मस्ती ? बड़ी-बड़ी चट्टानों के बीच तैरना? या गेंद का वह नया खेल जो उसने सीखा है? या फिर जंगली सुअर का वह नन्हा-मुन्ना जो उनके रास्ते से गुजरा था?

बहुत ज्यादा सोचने की जरूरत नहीं थी। उसने अपना कलम उठाया और लिखना शुरू कर दिया...

कुछ दिनों बाद जब चन्दू की मां ने उसकी चिट्ठी खोली तो उसमें लिखा था- ''प्यारी मां! मुझे तुम्हारी चिट्ठी मिल गयी। चन्दू।''

-अनुराग ट्रस्ट से साभार

माथापच्ची

1. एक बैंक में खजांची, मैनेजर और एजेंट के पदों पर कमल, सरिता और शीला काम करते हैं। लेकिन कौन खजांची है, कौन मैनेजर और कौन एजेंट यह नहीं मालूम। हां, यह पता है कि एजेंट अपने मां-पिता की एकमात्र संतान है और उसे सबसे कम वेतन मिलता है। शीला की शादी कमल के भाई से हुई है और उसे (शीला को) खजांची से ज़्यादा वेतन मिलता है। तुम बताओ कौन खजांची है, कौन मैनेजर और कौन एजेंट?

2. चिंटू और हमीदा कंचे खेल रहे थे। हमीदा ने चिंटू से कहा, 'अगर तुम मुझे एक कंचा दे दो तो हम दोनों के पास बराबर कंचे हो जाएंगे।'
चिंटू ने झट जवाब दिया,'अगर तुम मुझे एक कंचा दे दो तो मेरे पास तुमसे दुगने कंचे हो जाएंगे। कोई हमें यह बताए कि उन दोनों के पास कितने-कितने कंचे रहे होंगे।

3. सलमा 100 रुपए का नोट लेकर दुकानदार के पास गई। उसने दुकानदार से कहा,''भाई साहब, 100 रुपए के खुले दे दीजिए।'' दुकानदार ने सलमा को कुल 50 नोट दिए, लेकिन उसमें दो रुपए का एक भी नोट नहीं था। बताओ, दुकानदार ने सलमा को कितने रुपए के नोट दिए।

4. नीचे लिखे क्रम को ध्यान से देखें। अगली संख्या क्या होनी चाहिए?
1, 4, 9, 16, 25
थोड़ा सोचने पर पता लगता है कि ये सभी वर्ग हैं। इसलिए अगली संख्या 36 होगी। परन्तु कोई क्रम किसी अन्य नियम पर आधारित भी हो सकता है। उदाहरणार्थ इसे देखिए-
31, 28, 31, 30, 31
अगली संख्या क्या है? उत्तर है 30, क्यों? क्योंकि यह क्रम साल के महीनों में दिनों की संख्या का क्रम है। छठा महीना जून होता है जिसमें तीस दिन होते हैं।
अगला क्रम संख्याओं का नहीं बल्कि आकृतियों का है। इनके पीछे भी कोई नियम चल रहा है। अगली आकृति क्या होगी?

-एकलव्य की पुस्तक 'माथापच्ची' से साभार
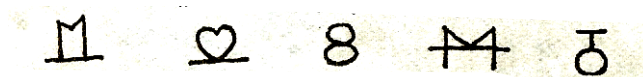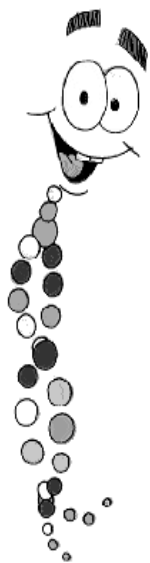
धातुएं - कैसी कैसी !

कितनी अजीब बात है कि संसार में करीब 100 तत्व कुदरती तौर पर पाए जाते हैं, और इनमें से 80 से ज्यादा धातुएं हैं। ये आपस में एक दूसरे से मिलते जुलते हैं लेकिन फिर भी इनमें अजीबोगरीब आश्चर्यों की कोई कमी नहीं।

धातु विज्ञानी धातुओं को लोहे (ferrous) और अलौह (non-ferrous) में बांटते हैं। लौह धातुओं में लोहा और इसके मिश्रण हैं। बाकी सब अलौह हैं। इसके अलावा 'शाही' (noble) धातुएं हैं जैसे चांदी, सोना, प्लैटिनयम और उनके साथी।

उदाहरण के लिये सोचो कि अलग अलग धातुओं के रंग कैसे हैं?

हर धातु की असल में खुद की विशेष रंगत होती है। गहरी, या चमकदार चांदी जैसी सतह में हमेशा एक खास रंग की आभा होती है। वैज्ञानिकों ने जब भी धातुओं को बहुत शुद्ध अवस्था में परखा है, तो यही पाया है। बहुत सी धातुओं को जब हवा में छोड़ें तो जल्दी ही (या देर से) उनपर एक आक्साइड की पर्त जम जाती है जो उनके असली रंग को छिपा देती है। पर शुद्ध धातुओं में बहुत सारे रंगों की छटाएं होती हैं। ध्यान से देखने पर नीली जैसी, हरी-नीली, हरी, लालिमा या पीलापन लिये, घने बादलों की तरह गहरी सलेटी या चांदी सी चमकती, जो किरणों को शीशे की तरह वापस फेंकती हैं- तरह तरह की आभाएं मिलेंगी।

सोडियम जैसी अति सक्रिय धातु का टुकड़ा देखें तो गंदे मिट्टी के ढेले जैसा नजर आता है। असल में यह सोडियम के आक्साइड का रंग है जो हवा में सोडियम को निकालते ही बन जाता है। सोडियम इतना सक्रिय है कि पानी के साथ भी विस्फोटक रूप से क्रिया करता है। इसलिये शुद्ध सोडियम को मिट्टी के तेल में डुबा कर

सोडियम को चाकू से काटना

पानी में विस्फोट करता सोडियम

रखना पड़ता है। अगर सोडियम का असली रंग देखना हो तो उसे चाकू से काटना पड़ता है। (जी हां, वह रबड़ जैसा नर्म होता है!) काटते ही कुछ पल के लिये एक चमकती सलेटी आभा दिखती है। पर तुरंत ही यह रंगत आक्साइड की पीली परत से ढक जाती है।

अक्सर हमारे मन में ऐसी कल्पना होती है कि धातुएं भारी होती हैं, क्योंकि हमने ज्यादातर भारी धातुएं ही देखी हैं। क्या तुम ऐसी धातु सोच सकते हो जो पानी पर तैरे? लीथियम, सोडियम और पोटाशियम पानी पर तैरते रहते हैं क्योंकि ये पानी से हल्के हैं। लीथियम का घनत्व पानी से आधे से भी कम होता है। अगर लीथियम अति सक्रिय न होता तो उसकी कई बढ़िया चीजें बन सकती थीं। सोचो कोई जहाज या कार जो लीथियम की बनी हो। दुर्भाग्य से उसकी दूसरी विशेषताएं हमें ऐसा नहीं करने देतीं।

अगर धातुओं में ज्यादा वजन का चैंपियन ढूंढें तो वह है धातु ओसमियम (osmium)। इसके एक घन सेंटीमीटर का वजन 22.6 ग्राम होगा (यानी पानी से 22.6 गुना ज्यादा)! अगर तराजू के एक पलड़े पर ओसमियम का एक घन रखें तो दूसरी ओर शायद तांबे के तीन घन, सीसे के दो घन या यिट्रियम के चार घन रखने पड़ेंगे। वजन में ओसमियम के नजदीकी पड़ोसी हैं प्लैटिनम और इरिडियम! 'शाही' धातुएं भी बहुत भारी होती हैं।

धातुओं को बहुत कठोर भी माना जाता है। कठोर इच्छाशक्ति और बलशाली व्यक्ति के लिये फौलादी इरादे या फौलादी मांसपेशियां जैसे शब्द प्रयोग होते हैं। लेकिन धातुओं की दुनिया में हमेशा ऐसा नहीं होता।

धातु संसार में लोहा बेचारा कहीं नहीं ठहरता। इसमें चैपियन क्रोमियम है जोकि हीरे से थोड़ा ही पीछे है। हैरानी की बात तो यह है कि दुनिया के सबसे कठोर पदार्थ धातु हैं ही नहीं। कठोरता की माप में सबसे ऊपर हीरा आता है (जोकि कार्बन का एक रूप है) और उसके बाद बोरोन के क्रिस्टल। लोहे को तो नरम धातु कहना चाहिये क्योंकि यह क्रोमियम के मुकाबले केवल आधा कठोर है। और अगर हल्के वजन वाले सोडियम, पोटाशियम, लीथियम की बात करें, तो वे तो मोम जैसे नर्म होते हैं।

पद्मा के पन्ने

घर में ही

हर बार लेखिका और वैज्ञानिक टी. वी. पद्मा तुम्हारे लिए कुछ न कुछ लिखती हैं। इस बार वे टिंकू की मजेदार साइकिल यात्राओं की कथा समाप्त कर रही हैं। पिछले अंकों में तुमने पढ़ा था कि किस प्रकार टिंकू को एक पुरानी जादुई साइकिल मिलती है, जो उड़ सकती है। टिंकू और किट्टी अब तक बहुत सी साइकिल यात्राओं पर जा चुके हैं।

टिंकू को ऐसा महसूस हो रहा था जैसे किट्टी के साथ सब कुछ ठीक नहीं चल रहा, उनकी पिछली यात्रा के बाद से वह बहुत चुपचाप रहने लगी थी। बरामदे में किट्टी से मिलने जाते टिंकू ने सोचा–'पता नहीं क्या चीज़ उसे परेशान कर रही है।' किट्टी बहत चुप खड़ी रही, जब टिंकू ने उसपर से धूल पोंछी, उसमें तेल डाला और टायरों में हवा भरी। टिंकू से आखिरकार यह चुप्पी बरदाश्त न हुई। ''तुम्हें क्या परेशानी है, किट्टी?'' उसने बोल ही दिया। ''क्या मैंने कुछ कहकर तुम्हें ठेस पहुंचाई है? बताओ न! हमारे दोस्त होने का क्या फायदा अगर हम खुलकर एक दूसरे से बात न कर सकें?'' उसकी हैरानी की सीमा न रही जब उसने देखा कि किट्टी का शरीर सिसकियों के साथ हिलने लगा। ''किट्टी, किट्टी, रो मत। क्या तुम बीमार हो? क्या परेशानी है?''

''ओह टिंकू, मैं बीमार नहीं हूं, पर मैं बहुत थकी हुई हूं। मेरे साथ कुछ बहुत गड़बड़ है। जिस दिन से मैं दलदल में फंसी, उसके बाद से मेरे लिये उड़ना बहुत कठिन हो गया है। उस दिन मैंने हवा में ऊपर उठने की कोशिश की, पर मैं उठ ही नहीं पाई। तुम चाहो तो मुझे वापस कोठरी में डाल सकते हो। मैं अब तुम्हारे किसी काम की नहीं रही।''

''किट्टी, किट्टी, मेरी छोटी बुद्धू साइकिल,'' टिंकू ने अपना सिर हिलाया, ''मुझे ज्यादा ध्यान रखना चाहिये था। मुझे समझना चाहिये था कि हमारी यात्राएं तुम्हें थका डाल रही हैं। लेकिन वापस कोठरी में डालने की क्या बकवास है? मैं तो तुम्हें तबसे ही प्यार करने लगा था जबसे मैंने तुम्हें देखा था, जब मुझे कोई भनक भी नहीं थी कि तुम एक जादुई साइकिल हो। मैं तुम्हारी हमेशा देखभाल करूंगा,

किट्टी। जब मेरा स्कूल अप्रैल में खुलेगा तो मैं रोज तुम पर सवार होकर ही स्कूल जाऊंगा।''

''आओ किट्टी, कहीं सैर के लिये चलते हैं।''

''कहां को?''

''कोई खास जगह नहीं, बस घर के पीछे के कच्चे रास्ते पर। मैं हमेशा से उत्सुक रहा हूं कि वह रास्ता कहां जाता है।''

रास्ता सुबह की बारिश के कारण गीला और अंधेरा था। लेकिन सूरज निकल आया था, और एक बहुत सुहानी दोपहर थी। टिंकू और उसकी साइकिल हिचकोले खाते बढ़ते रहे, बड़े गड्ढों से बचते हुए। 'अरे टिंकू, ऐ।'' टिंकू ने ब्रेक को दबाया और नीचे उतर गया। वह था। लेकिन कैसे हो सकता है? वही था। हां, उन हरी आंखों में कोई गलती नहीं हो सकती थी- ल्यूक, बेल्जियम से। ''तुम यहां क्या कर रहे हो, ल्यूक?'' टिंकू ने पूछा। ''तुम्हें एक बार फिर देख कर मैं बहुत ही खुश हूं।'' ''मेरे मां-बाप ने तय किया कि वे भारत आएंगे.... ......'' ल्यूक ने कहा। ''तो अ ब हम यहां काफी समय रहेंगे। तुम्हारी उड़ने वाली साइकिल कैसी है? क्या मैं उस पर सवारी कर सकता हूं? तुम्हें मेरी साइकिल कैसी लगती है? बेशक, यह उड़ती नहीं है।'' ''मेरी भी नहीं उड़ती। असल में इसकी अब थोड़ी उम्र होने लगी है।''

''तुम्हें भारत कैसा लगता है, ल्यूक?'' टिंकू ने पूछा, जब वो दोनों साथ-साथ साइकिल करते हुए आगे चले। ''बहुत अच्छा। मुझे कभी कभी बेल्जियम की याद आती है, ले. किन भारत में कितनी सारी सुंदर चीजें हैं। यहां सूरज हमेशा कितना बड़ा और गर्म है। और यहां बारिश कितनी अच्छी है-जिस तरह मानसून के मौसम में वह गरजते हुए सड़कों पर बरसती है।''

जब टिंकू उस रात अपने बिस्तर पर लेटा, उसे तालाब में नर मेंढक टर्राते हुए सुनाई दे रहे थे। झींगुरों ने अपना गान चालू कर दिया था। यदा-कदा कोई घरेलू छिपकली बोलने लगती। ''ल्यूक ठीक कहता है। भारत एक खूबसूरत देश है। किट्टी के साथ उन बहुत सारी जगहों में जाना बहुत बढ़िया रहा, लेकिन यही देश है जिसे मैं सबसे ज्यादा प्यार करता हूं। यह हमेशा मेरा घर रहेगा।''

(समाप्त)

वे मुझे रोकते हैं
वे मुझे रोकते हैं
धूल में नहाने से
जैसे चिड़ियां नहाती हैं,
वे हंसने भी नहीं देते
जी खोलकर
जैसे दुनिया के सभी
फूल हंसते हैं।
मुझे समझ में नहीं आता
वे क्या पढ़ाते हैं, उसमें
न नदी होती है न पहाड़
न गीत गाते झरने
मेरी नन्हीं सी आंखों में जो बसा है जंगल, उसमें
किसी भी पेड़ का
पत्ता छू कर नहीं देखा है
मेरे शिक्षक ने।
मैं चाहती तो हूं
पढ़ूं पर
शिक्षक मुझे वैसा नहीं पढ़ाते
जैसा मैं चाहती हूं!
शुक्ला चौधरी, एक छोटी बच्ची

मां की गीत

-नवीन सागर

सो जा ओ सो जा रे।
उधर न आए नींद अगर तो
इधर गोद में आ रे।

पंछी लौट बसेरा सोये
आसमान में तारे
सोये पेड़ पत्तियां सोयीं
फूल सो गये सारे
ऊंघ रहीं बत्तियां
पड़े हैं जहां-तहां अंधयारे
नींद कहीं से बुला रही है
आ रे! आ रे! आ रे!
सो जा ओ सो जा रे!
उधर न आए नींद अगर तो
इधर गोद में आ रे!

एक पानी की बाल्टी की किनारी के ऊपर देखो और एक चम्मच को उसमें खड़ा डुबो दो। पानी के अंदर चम्मच काफी छोटी नज़र आएगी।

इसकी क्या वजह है? हम किसी वस्तु को इसलिये देख पाते हैं क्योंकि उसपर किसी प्रकाश के स्रोत (जैसे सूरज, बल्ब आदि) से प्रकाश की किरणें गिरती हैं। फिर उस वस्तु के हर बिन्दु से यह प्रकाश चारों दिशाओं में बिखर जाता है। कुछ किरणें सीधे हमारी आंखों तक पहुंचती हैं और हम उस वस्तु को देख पाते हैं।

इस प्रयोग में चम्मच से आने वाली प्रकाश की किरणें सीधे हमारी आंख तक नहीं पहुंचती। पानी की सतह पर वे मुड़ जाती हैं। हमारी आंख तो चीजों को किरणों की सीध में ही समझती है। इसलिये उसे चम्मच का निचला सिरा कम गहरा नजर आता है। इसी कारण से पानी का तल हमेशा जितना गहरा होता है उससे कम गहरा नजर आता है। पुराने समय में रेड इंडियन लोग भाले या तीर से पानी में मछलियां मारते थे। उन्हें पता था कि मछली जहां दिखती हैं उससे कहीं ज्यादा गहरे पर तैर रही होती हैं, इसलिये वे निशाना कहीं ज्यादा गहरे पर लगाते थे।
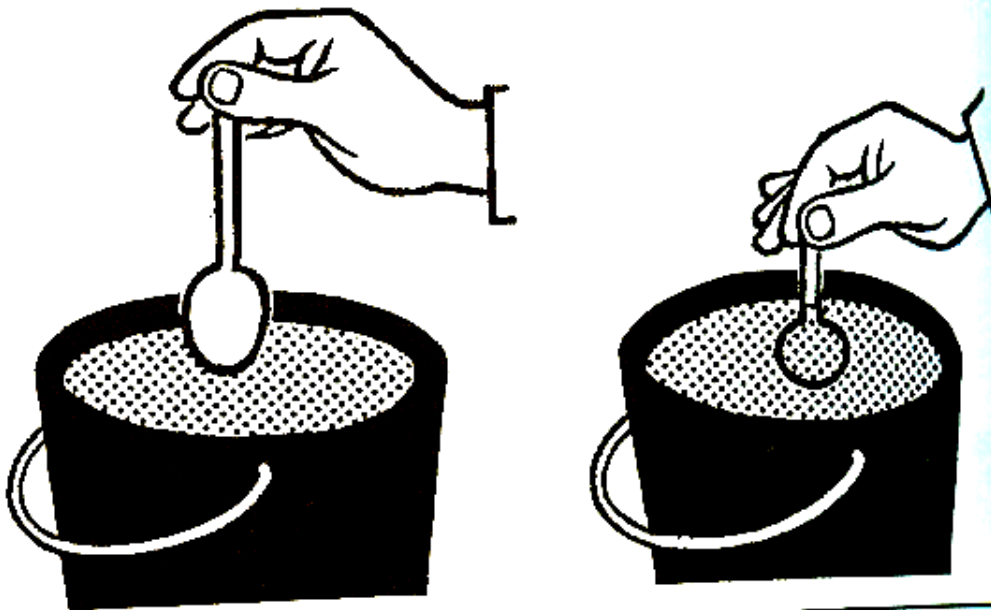
पानी के नीचे ज्वालामुखी

एक छोटी सी बोतल में तेज गर्म पानी भर दो। इस पानी में स्याही डाल कर इसे रंगीन भी बना दो। अब इस छोटी बोतल को रस्सी से बांध कर ठंडे पानी के एक जार के अंदर रख दो। तुरंत ही एक रंगीन पानी का बादल ऊपर एक ज्वालामुखी की तरह ऊपर उठकर पानी की सतह तक फैल जाएगा।

गर्म पानी ठंडे पानी के मुकाबले कहीं ज्यादा जगह घेरता है क्योंकि गर्म करने से पानी के अणुओं के बीच की जगह बढ़ जाती है। इस वजह से गर्म पानी ठंडे पानी के मुकाबले ज्यादा हल्का होता है और ऊपर उठता है। जब हम पानी बर्तन में नीचे से गर्म करते हैं तब भी ऐसा ही होता है- गर्म हल्के पानी का लगातार ऊपर उठना और ठंडे भारी पानी का नीचे आना। इस तरह बनी धाराएं संवहन धाराएं या convection currents कहलाती हैं। हमारे प्रयोग में थोड़ी देर बाद गर्म और ठंडा पानी घुल मिल जाएंगे और स्याही पूरे में फैल जाएगी।
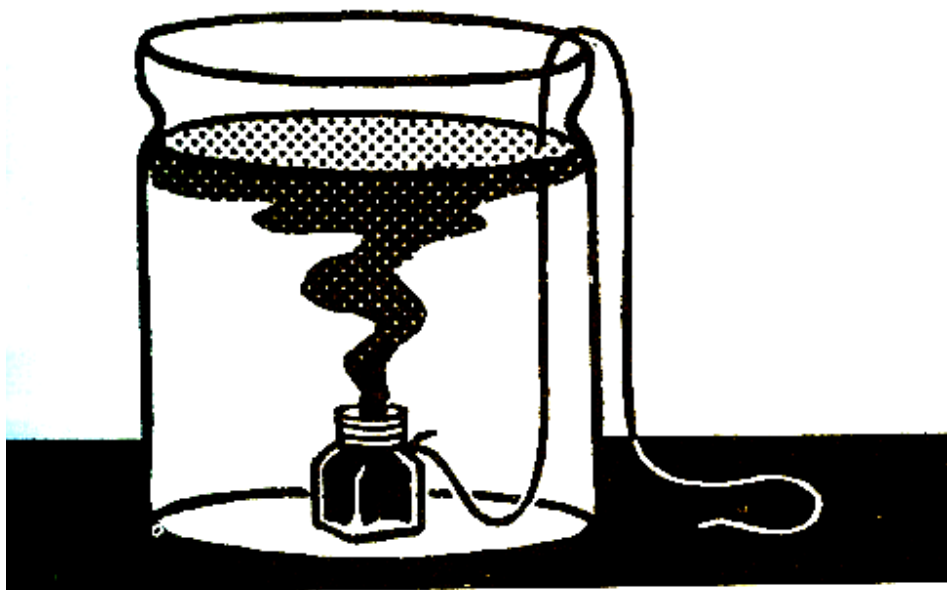
रेगिस्तान में पानी

हम कई बार सुनते हैं कि लोग रेगिस्तान में प्यास से मर गए। लेकिन असल में एक छोटा सा गुर अपनाकर ये लोग अपने को बचा सकते थे। हम एक प्रयोग से इसे करके देख सकते हैं।

रेत में एक थोड़ा गहरा गढ़ा खोद कर उसके बीच में एक छोटा बर्तन रख दो। अब एक बड़ी सी प्लास्टिक की शीट या थैला गढ़े के ऊपर फैला दो और उसके किनारे अच्छी तरह रेत में दबा दो। इस शीट के बीच में एक छोटा सा पत्थर रख दो ताकि नीचे दब कर बर्तन के ऊपर इसकी नोक या कीप जैसी बन जाए। पर प्लास्टिक शीट में कोई छेद नहीं करना है। थोड़ी ही देर में प्लास्टिक शीट की निचली सतह पर पानी की बूंदें इकट्ठी होनी शुरू हो जाएंगी। ये बड़ी होती जाएंगी और आखिर में बहकर बर्तन में टपक जाएंगी।

असल में सूर्य की धूप से प्लास्टिक के नीचे की मिट्टी गर्म हो जाती है। इस रेत में जो भी नमी होती है वह भाप बनकर उठती है। शीट के नीचे यह नमी इतनी इकट्ठी हो जाती है कि जल्दी ही ठंडी शीट पर पानी में रूप में इकट्ठी होने लगती है।
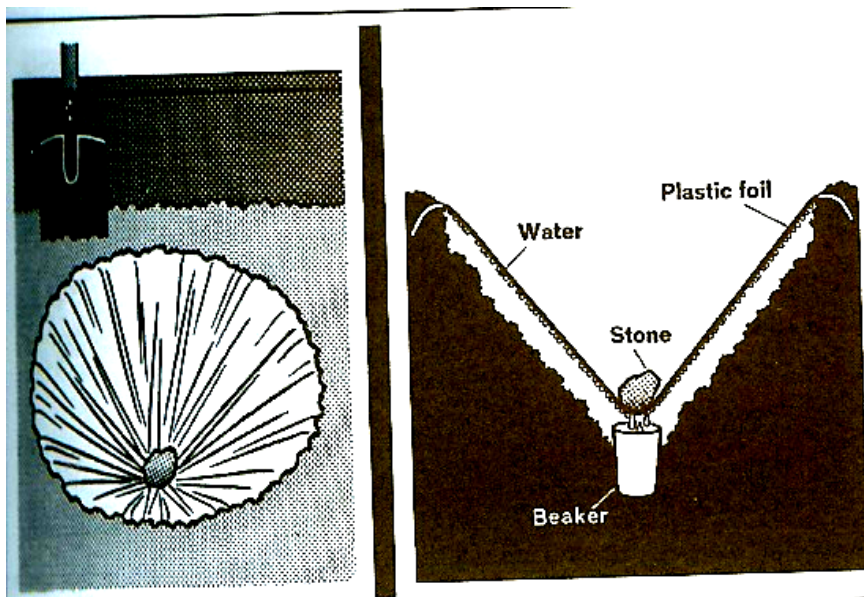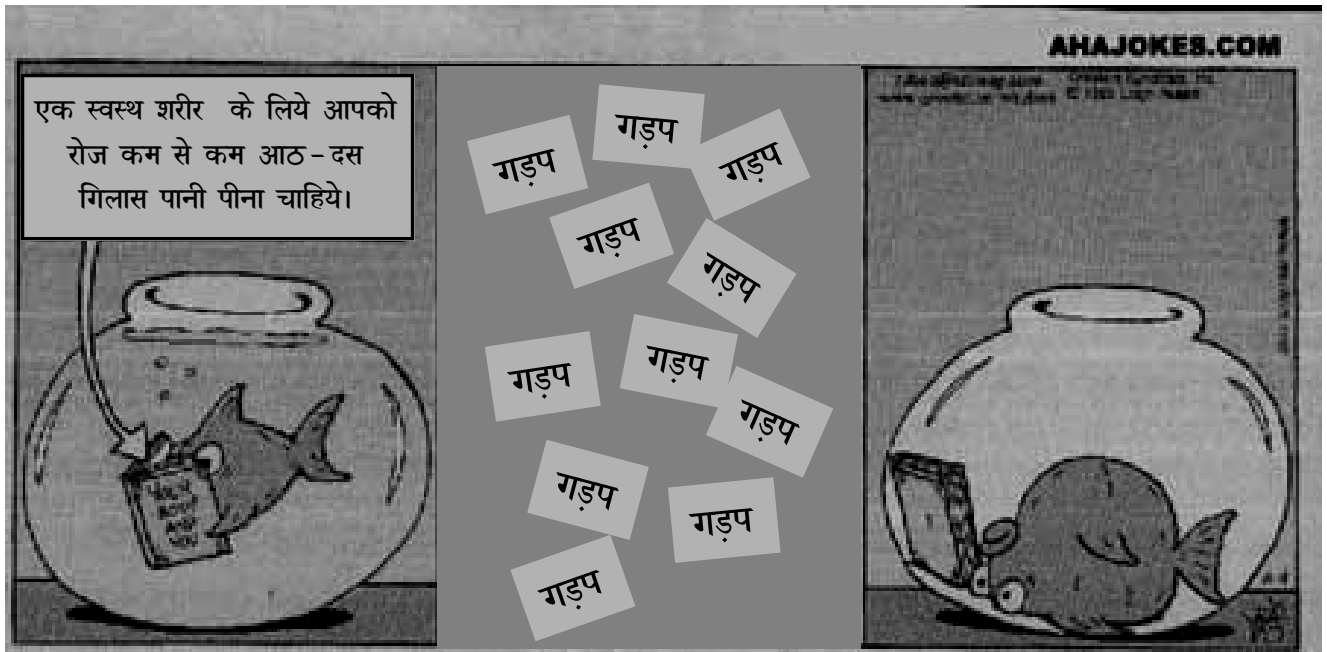
क्या मछलियां

क्या मछली पानी पीती है? आप क्या सोचते हैं? मुझे पता है आप हंसेगे-यह भी कोई सवाल है? मछली तो जैसे ही मुंह खोलती है, उसका मुंह पानी से भर जाता है।

मछली को अच्छा लगे न लगे कुछ पानी खाने के साथ उसके पेट में चला जाता है। क्या यह पानी उसके लिए काफी है? क्या मछलियों को कभी प्यास लगती है? वैज्ञानिकों ने इन सब सवालों के उत्तर बहुत पहले ही खोज लिए थे।

धरती पर जहां-जहां भी पानी है मछली वहां-वहां रह सकती है। पर हर प्रजाति की मछली एक खास प्रकार के वातावरण में ही रह सकती है। कुछ ही ऐसी मछलियां हैं जो खारे (यानी समुद्र का बेहद नमकीन पानी- इतना नमकीन कि वह कड़वा लगता है) पानी से मीठे पानी में और वापस अपने पुराने परिवेश में, बिना किसी शारीरिक नुकसान के जा सकती हैं। ईल मछली का इस मामले में कोई मुकाबला नहीं है। वह अपना आधा जीवन खारे पानी में गुजारती है और आधा मीठे पानी में। ऐसा क्या है, जो मछली को एक तरह के पानी से दूसरे में प्रवेश करने से रोकता है? उनकी बाहरी चमड़ी, उनके मुंह की अन्दरूनी सतह, गलफड़े और कोशिकाओं (cells) की बाहरी झिल्ली पानी को बहुत आसानी से अंदर बाहर आने और जाने दे सकती हैं। इस झिल्ली से पानी बहुत जल्दी रिस जाता है, पर नमक और कुछ चीजें बाहर ही रह जाती हैं। इसे कहते हैं Selective Permeability यानी कुछ चीजों को अंदर आने देना और कुछ को नहीं।

पानी किस ओर फिल्टर होता है? जहां पानी ज्यादा हो उस ओर या दूसरी ओर जहां पानी कम हो? यह इस बात पर निर्भर करता है कि पानी में कौन-कौन से तत्व घुले हैं। अगर यह घुले हुए तत्व अधिक हैं, तो दबाव अधिक होगा। ऐसा घोल पानी को अधिक शक्ति से अपनी ओर खींचेगा। इस खिंचाव को osmotic pressure कहते हैं। ताजे पानी या मीठे पानी का औसमौटिक दबाव शून्य होता है। जबकी खून और कोशिकाओं के अंदर के द्रव्य में बहुत सा नमक और प्रोटीन मिले होते हैं, जिससे वहां यह दबाव 6-10 वायुमंडल के बराबर हो जाता है। इसी फर्क के कारण मीठे पानी में रहने वाले जीव बाहर से अंदर की ओर पानी चूस सकते है, क्योंकि पानी हमेशा कम औसमौटिक दबाव वाले क्षेत्र से अधिक दबाव वाले क्षेत्र की ओर जाता है। अगर इन जीवों में इस अत्यधिक पानी को बाहर निकालने के लिए कोई तरीका न होता, तो वह बहुत जल्दी पानी से फूल कर मर जाते। इसलिए वहां रहने वाली मछलियों को पानी पीने की कभी जरूरत नहीं पड़ती। बल्कि उन्हें उनके शरीर के अंदर घुस आए अनचाहे पानी से छुटकारा पाने के लिए ही बहुत मेहनत करनी पड़ती है।

ं पानी पीती हैं?

–शीतल चौहान

पर समुद्र के खारे पानी में रहने वाली मछलियों की समस्या कुछ और ही होती है। समुद्र के पानी में घुला नमक उनेक शरीर के नमक के मुकाबले बहुत अधिक होता है। और समुद्र के पानी का औसमौटिक दबाव 32 वायुमंडल होता है, जबकी मछली के शरीर का 10-15 वायुमंडल। इसलिए प्यासा समुद्र हमेशा उनके शरीर से पानी बाहर चूसता रहता है। पहली नज़र में तो यह पढ़ कर ऐसा लगेगा कि समुद्र का पानी मछलियों को निचोड़ देगा और इससे तो मछलियां हमेशा प्यासी ही रहेगीं। उन्हें लगातार पानी पीना पड़ेगा।

लेकिन हैरानी की बात यह है कि सभी समुद्री मछलियों पानी नहीं पीतीं। बहुत प्राचीन जैसे शार्क और रे मछलियां जो आज की हड्डियों वाली मछलियों से शायद बहुत पहले समुद्र में रहने आई थीं, उन्होंने अपने आप को कुछ अलग तरीके से वहां की स्थितियों के अनुकूल बनाया। उन्होंने यूरिया को
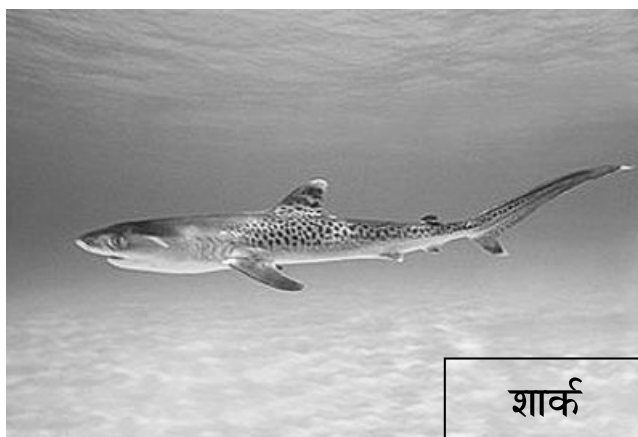
शार्क
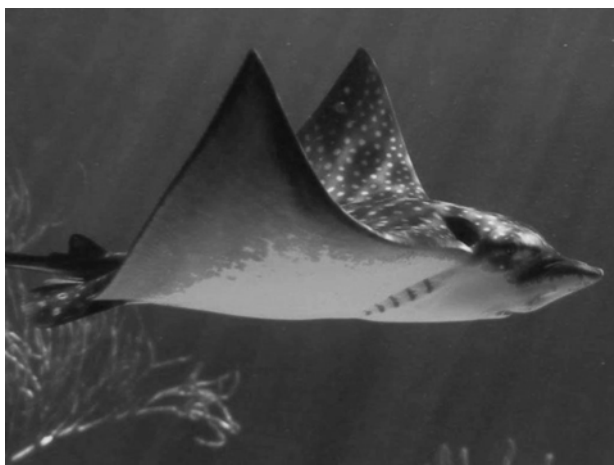
रे मछली

अपने खून में रोकने की कला सीख ली। यूरिया एक हानिकारक तत्व है, जिसे और जानवर तुरंत ही शरीर से बाहर निकाल देते हैं (हम इसे मूत्र के जरिये निकालते हैं)। पर शार्क और रे को अपने गलफड़ों को एक खास झिल्ली से ढंकना पड़ता है, ताकी यूरिया बाहर न आ पाए और उनके खून का औसमौटिक दबाव समुद्र के पानी से भी अधिक हो जाए। इससे उनका शरीर भी किसी मीठे पानी की मछली की तरह समुद्र से पानी अंदर चूसता रहता है। ये मछलियां इस पानी से छुटकारा पाने के लिए हमेशा चिंतित रहती हैं।

शार्क से यही तरीका केकड़े खाने वाले मेंढक ने सीखा जिसे हाल ही में वैज्ञानिकों ने दक्षिण- पूर्वी एशिया में खोजा। सिर्फ इसी मेढ़क ने खारे पानी में जीना सीखा। यह मेंढक हालांकि अंडे मीठे पानी में देते हैं, पर जब इनके बच्चे जवान हो जाते हैं, तब यह मीठे पानी को छोड़ समुद्र में चले जाते हैं, जहां ये केकड़ों को अपना भोजन बनाते हैं। शार्क की तरह यह मेंढक भी अपने शरीर में यूरिया जमा कर सकते हैं। समुद्र में जाने से पहले यह यूरिया जमा कर लेते हैं। और मीठे पानी में जाने से पहले यह उसे शरीर से बाहर निकाल देते हैं। तो जैसा भी वातावरण हो, मेंढक को पानी पीने की जरूरत नहीं होती।

केकड़े खाने वाला मेंढक

भारतेंदु हरिश्चंद्र हिंदी साहित्य में एक खास स्थान रखते हैं। अप्रैल फूल बनाने अथवा मूर्ख दिवस मानने की प्रथा भारत में यूरोपीय देशों से आई ।

भारत में उस समय अंग्रेजों का राज था। भारतेंदु जी ने अंग्रेजों को मूर्ख बनाने की योजना बनाई। उन्होंने काशी में चुपके चुपके यह अफवाह फैला दी कि फलां दिन काशी के प्रसिद्ध योगी महाराज पानी पर चल कर गंगा पार करेंगे।

फिर क्या था। उस दिन सवेरे से गंगा तट पर भीड़ एकत्र हो गई। हर कोई पानी पर चलने का चमत्कार देखना चाहता था। अंग्रेज अधिकारी भीड़ को नियंत्रित करते करते परेशान । साधु संतों के विषय में उन्होंने बहुत सुन रखा था। भारतेंदु ने बड़े-बड़े अधिकारियों को देखा और बोले, योगी महाराज की प्रकृति सहसा बिगड़ गई है। वह नाव से गंगा पार करेंगे। अधिकारियों के मुख पर निराशा छा गई। यह देखकर भारतेंदु जी बोले, ''निश्चिंत रहिए। वह वापसी में अवश्य ही पानी पर चल कर आएंगे।''

अधिकारियों के चेहरे पर संतोष दिखा। भारतेन्दु जी महाराज के साथ नाव में बैठ गए। नाव के आगे बढ़ते ही उन्हों ने झोले में से एक झण्डा निकाला और फहरा दिया। झण्डे पर लिखा था ''मूर्ख दिवस''। अंग्रेज मुंह ताकते रह गए।

रस्टी की तलैया

–रस्किन बांड
अनुवाद: शीतल चौहान

बारिश होने वाली थी। मैं बारिश को हिमालय की तहलटी को पार करते देख रहा था, और उसकी खुशबू हवा में महसूस कर रहा था। पर घर की ओर जाने की बजाय, मैंने अपने कदम जंगल के रास्ते में उगी पत्तियों और कटींली झाड़ियों के बीच बढ़ा दिए। मुझे पहाड़ी के नीचे बहते हुए पानी की आवाज सुनाई दी थी।

मुझे एक चट्टान पर फिसल करके छोटी सी घाटी की ओर जाना पड़ा और वहां मुझे एक छोटी सी नदी मिली, जो छोटे–छोटे गोल पत्थरों के ऊपर बह रही थी। मैंने अपने जूते उतारे और बहाव के ऊपर की तरफ चलने लगा। पहाड़ी ढलान से पानी रिस रहा था, पत्तियों, घासों और जंगली फूलों के बीच, दोनों तरफ सीधी सपाट खड़ी पहाड़ियां, घाटी को छुपाए हुए थीं। चट्टानें चिकनी, लगभग मुलायम थीं, कुछ एक सलेटी थीं और कुछ पीली। एक छोटा सा झरना चट्टान के ऊपर से बह रहा था और हरे सेब से पानी से भरी एक गोल, गहरी तलैया बना रहा था।

जब मैंने वह तलैया देखी, मैं मुड़ा और घर की ओर भागा क्योंकि मैं औरों को बताना चाहता था। बारिश शुरू हो गई, पर मैं नहीं रुका, घर तक भागता रहा।

मेरे दो बहुत नजदीकी दोस्त थे–अनिल और सोमी। अनिल देहरादून में दिलाराम बाजार की भीड़ भरी गली में रहता था। वह

स्वच्छंद और थोडा सा खतरनाक था। पल में उसका मिज़ाज बिगड़ जाता था। दूसरी तरफ सोमी भावुक और नर्म था। पर अनिल की तरह उसे भी मज़े करने और खतरों से खेलने का शौक था। और मैं जबकि उनसे एक क्लास आगे पढ़ता था, वे ही अधिकतर रोमांचक खेल चुनते थे। मैं सिर्फ झुंझलाता और अनमने मन से उसमें शामिल हो जाता। पर वह तलैया मेरी खोज थी और मुझे उस पर गर्व था।

हम इसे ''रस्टी की तलैया कहेंगे,'' सोमी ने कहा। ''अनिल ख्याल रखना, यह गुप्त तलैया है, किसी को भी इसकी भनक नहीं लगनी चाहिए।''

मेरे ख्याल से कोई भी चीज हमें एक दूसरे के इतना करीब नहीं लाई, जितनी यह तलैया। सोमी अच्छा तैराक था। वह चट्टान के ऊपर से छलांक लगाता और पानी में बहुत गहरे तक गोता लगाता, बिल्कुल एक शानदार सुनहरी मछली की तरह। अनिल की टांगें और बाजू बहुत लंबे थे, वह गोता तो बहुत जोश से लगाता पर बहुत कम होशियारी से। मैं भी चट्टान से कूदता पर पेट के बल पानी में गिर जाता।

नदी में चांदी के रंग की मछलियां भी थीं। पहले हमने उन्हें कांटे से पकड़ना चाहा, पर बहुत जल्दी वह कांटे में बिना फंसे चारा झटकने की कला सीख गई।

अगली बार हमने एक चादर ली, उसे नदी के एक किनारे पर आर-पार तान दिया। पर मछलियां उनके पास फटकीं भी नहीं। आखिरकार अनिल हमें बिना बताए एक बारूद की छड़ ले आया। पानी के जरिए उठती चौंध और कान-फोड़ू धमाके ने मुझे और सोमी को दुपहर की झपकी से अचानक चौंका कर उठा दिया। आधी से ज्यादा पहाड़ी टूट कर तलैया में जा गिरी और उसके साथ अनिल भी! पर हमने उसे बाहर निकाल ही लिया

और साथ में बहुत सारी होश उड़ी मछलियों को भी।

इस धमाके के असर से अनिल को एक और तरकीब सूझी और वह थी एक ओर बांध बनाकर, तलैया को चौड़ा करना। पर उसने बरसात का मौसम चुना था। एक दिन पानी की तेज धारा आई, जिसने बांध तोड़ दिया और घाटी में बाढ़ ला दी। हमारे कपड़े भी पानी के साथ बह गए और हमें रात का इंतजार करना पड़ा ताकि अंधेरे में छुप-छुपाके पीछे के दरवाजों से किसी तरह घर पहुंच सकें। गली के मोड़ पर सोमी पकड़ा गया, पर उसने ऐसा नाटक किया मानो वह एक नंगा साधू हो और भीख मांगने लगा। आखिरकार बिना फंसे वह घर के पिछले दरवाजे से घर में घुसने में कामयाब रहा।

हमारी और कारगुजारियां थीं कुश्ती और भैंसों की सवारी। हम नदी के किनारे एक रेतीली पट्टी पर कुश्ती लड़ते और भैंसों की सवारी करते जो कभी -कभी नदी पर पानी पीने और मिट्टी में लोटने आतीं। हम भैसों के ऊपर बैठकर उन्हें दुलत्ती मारते, चीखते और चिल्ला कर उन्हें आगे बढ़ने के लिए उकसाते, पर हम कभी भी उन्हें टस से मस नहीं कर पाए। ज्यादा से ज्यादा यह होता कि भैंसे पीठ के बल पलट जातीं और अपने साथ हमें भी कीचड़ में गिरा देतीं।

हां, हमें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता था, कि हम कीचड़ में कितने सन गए, क्योंकि हमें तलैया में सिर्फ एक छलांग मारनी पड़ती थी,
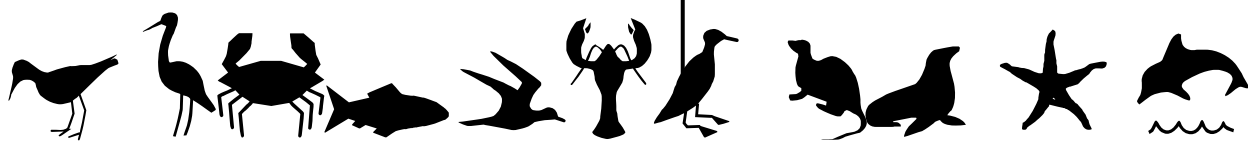
कीचड़ से पीछा छुड़ाने के लिए। अगर बिना किसी को पता, लगे कभी रात को बाहर निकलना हो पाता तो हम तलैया पर आते और चांदनी में नहाते। हम चुपचाप नहाते क्योंकि जंगल की शांति हमारे जोश को थोड़ा कम करती दिखती थी। पर कभी-कभी सोमी गाना गाता, और हम लाल, लम्बी उंगलियों जैसे क्रिसमस के फूलों की झाड़ी नीचे नदी की ओर बहाते।

मुझे याद नहीं आता कि हम कैसे बिछुड़े, क्योंकि उस समय हमें इसका बिल्कुल आभास भी नहीं हुआ। असल में हमने कभी सोचा ही नहीं कि हम बिछुड़ रहे हैं, या हम उस तलैया को छोड़ रहे हैं। उसके करीब एक साल बाद सोमी ने मैट्रिक की परीक्षा पास की और मिलिट्री अकादमी में चला गया। जब मैंने उसे करीब एक साल पहले देखा, उसने डरावनी और बिल्कुल फौजियों वाली मूंछे रख ली थीं। सोमी के जाने के कुछ समय बाद अनिल और उसके परिवार ने भी शहर छोड़ दिया। मैंने उसे फिर नहीं देखा। मैं उसे किसी परम्परागत व्यवसाय में देखने की कल्पना भी नहीं कर सकता, वह इतना उन्मुक्त और कुछ भी कर गुजरने वाला था। और फिर भी मैं यह सोचता हूं......जो जवानी में स्वच्छंद होते हैं वह अक्सर अच्छे नागरिक बनते हैं।

और उस तलैया का क्या हुआ?

पिछले हफ्ते ही मैं वहां गया था, चार साल के बाद।

पहले तो मैं उसे ढूढ़ ही नहीं पाया। मुझे वह घाटी मिली और वह पत्थरों का पथ भी, पर वहां पानी नहीं था, नदी ने अपना रुख मोड़ लिया था, वैसे ही, जैसे हमने मोड़ लिया है।

मैं निराश हो कर मुड़ गया, दिल में टीस लिए। गुम होकर तलैया ने ठीक नहीं किया। पर मैं अभी दूर नहीं गया था जब मैंने पानी की आवाज सुनी, और लड़कों का शोर। जंगल से अपना रास्ता बनाते हुए मैंने एक और तलैया देखी। और आधा दर्जन लड़के पानी में छींटे उड़ाते हुए।

उन्होंने मुझे नहीं देखा और मैं पेड़ों के झुरमुट से उन्हें खेलते हुए देखता रहा। पर असल में मैं उन्हें नहीं देख रहा था। मैं तो सोमी और अनिल और सुस्ताती भैंसो को देख रहा था। मैं वहां करीब घंटा भर खड़ा रहा, एक छाया की तरह, अपनी गुप्त तलैया कि उथली गहराईयों में फिर से विचरण करते हुए।

मौत

बात काफी पुरानी है। आजरिया नामक एक गांव में एक बूढ़ा रहता था। वह काफी कमजोर हो गया था। बूढ़ा जंगल जाकर लकड़ी काटता और गांव में उसे बेच कर अपना गुजारा चलाता था। एक दिन उसने ज्यादा लकड़ियां काट लीं। वह उठाने का प्रयास कर रहा था परन्तु कमजोरी के कारण नहीं उठा पा रहा था। अन्त में परेशान हो गया और कहा, ''मौत भी नहीं आती जो उठा ले जावे।'' यह सब करतूत एक औरत देख रही थी। वह आई। कहा ''चलो बाबा, मैं आ गई।'' बूढ़ा आदमी बोला, ''कौन?'' स्त्री ने कहा, ''मौत। आपने बुलाया था न मुझे।'' बूढ़ा भी कम नहीं था, कहा- ''चल लकड़ी उठा, मैंने तो सहायता करने को बुलाया था।''

प्रस्तुतिः लालनाथ, सूजाजी का गड़ा (बांसवाड़ा), राजस्थान

भेड़ बनाओ

नीचे कई चरणों में एक कार्टून भेड़ बनाने का तरीका दिखाया गया है। इसे देखकर तुम भी कार्टन चित्र बनाओ।
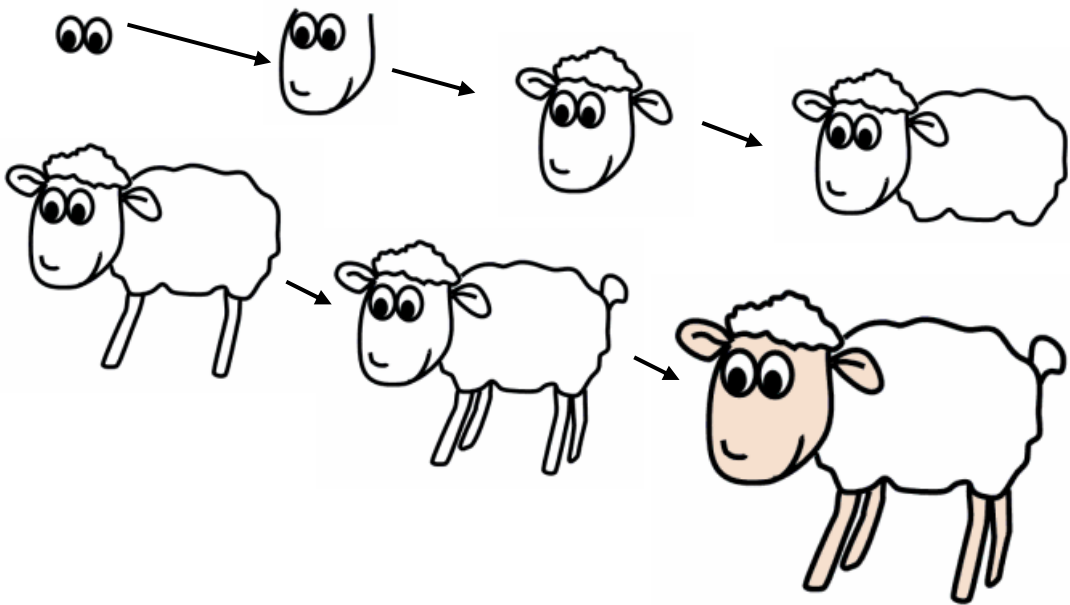
सिंधु लिपि का रहस्य कौन खोलेगा?

-डॉ अनीता रामपाल

कई पुरानी लिपियों का रहस्य तो आज भी बना हुआ है। जैसे हमारी ही पुरानी हड़प्पा सभ्यता की लिपि (चित्र-) में दी मुहरों पर बने सिन्धु लिपि के संकेत आज तक नहीं पहचाने गए हैं। कितने ही लिपिविदों को इसने चक्कर में डाल रखा है। इसे सिन्धु लिपि भी कहा जाता है चूंकि सिन्धु नदी के किनारे बसे कई पुराने शहरों की यह लिपि थी। इस सभ्यता का तो पिछले साठ-सत्तर सालों में ही पता चला है।

हड़प्पा सभ्यता के शहर भारत के सबसे पुराने शहर थे। लगभग पांच-छह हजार साल पहले (3500 ईसा पूर्व) ये शहर बसे थे। खुदाई के दौरान कई हजार मिट्टी की मोहरें और बर्तन मिले हैं जिन पर कुछ लिखा हुआ दिखता है। पर इन पर क्या लिखा है कोई ठीक से समझ नहीं पाया। इस लिपि की पहेली कोई बूझ पाए तो मज़ा आ जाए।

उन लोगों की चीज़ें देख-देखकर इतना अचम्भा होता है। इतने सवाल मन में उठते हैं कि आखिर कैसे इतने बढ़िया शहर बना पाए थे वे लोग? तौल के बांट, तांबे के बर्तन, पानी के शानदार हौज़ और नालियां आदि। यह सब बनाने का विज्ञान और तकनीक वे कैसे जान पाए थे? उनकी लिपि समझने पर हम उनके बारे में शायद और अधिक जान पाएं। और अपने ढेरों सवालों के कुछ उत्तर ढूंढ पाएं।

वर्णमाला के अक्षरों ने दिखाया कमाल

सबसे पुरानी लिपियां, चित्र संकेतों का इस्तेमाल करती थीं।
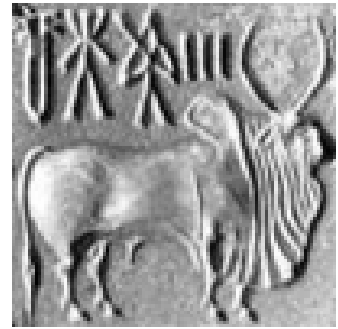
तभी तो मेसोपोटामिया, मिस्र, चीन और भारत की इन पहली लिपियों में सैकड़ों संकेत होते थे–हर अलग शब्द का मानो अलग ही संकेत था। परन्तु तीन हजार साल पहले (1000 ई0 पू0) लिखाई की कहानी ने एक नया मोड़ लिया। संकेतों की जगह आ गए अक्षर, जिन्होंने लिखाई में अपना कमाल दिखा दिया। बस, बीस–तीस अक्षरों से सभी कुछ लिखा जा सकता था। और यह कैसे? चूंकि अब हर शब्द को उसके स्वर से लिखा जाने लगा था।

देखिए, चाहे कितने ही अलग–अलग शब्द हों, जैसे चकमक, मामा, चमक, कच्चा, कम, चमचम, काकी, चाचा....................इन सभी शब्दों को लिखने के लिए हमें केवल तीन ही अक्षरों च, क, म, की ज़रूरत पड़ती है। है न? परन्तु चित्र संकेत बनाने की कोशिश करें! अलग–अलग संकेत बनाते आप थक जाएंगे। तो हुई न बचत अब अक्षरों से लिखने में।

वर्णमाला के अक्षरों की लिपि को तीन हजार साल पहले फीनिशियन लोगों ने बनाया था। वे लोग जहाज़ में बैठकर दूर देशों तक जाया करते थे व्यापार करने। उनके साथ उनकी लिपि भी दुनिया में कई जगह पहुंची। बस फिर क्या था। कई जगह अक्षरों वाली लिपियां बनने लगीं। हीब्रू, यूनानी, अरबी के साथ–साथ हमारे यहां भी अक्षरों वाली ब्राह्मी लिपि में लिखा हुआ है। ब्राह्मी लिपि से ही हमारी अधिकतर सभी लिपियां बनी हैं। परन्तु ब्राह्मी को आज आप पढ़ना चाहें तो पहचान नहीं पाएंगे। काफी अलग दिखती है यह हमारी हिन्दी की देवनागरी लिपि से। जरा नीचे देखें:
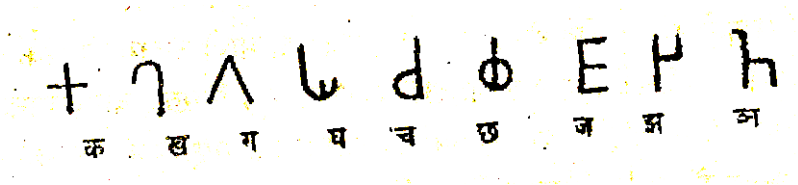
अच्छा, अब यही खत्म करते हैं लिखाई की इस लम्बी कहानी को। सच, कितना लंबा सफर तय किया है आपने! पच्चीस हजार साल पहले आदिमानव के उस हड्डी के 'कैलन्डर' से लेकर आज जैसी अक्षरों वाली लिपि तक।

कहा जाता है कि तीन हजार साल पहले जब वर्णमाला के अक्षर दुनिया में आए तो लिखाई में एक क्रांति आ गई थी, चूंकि लिखना इतना आसान हो गया था। सैकड़ों, हज़ारों, चित्र संकेतों से जूझना नहीं पड़ता। बस, पच्चीस–तीस अक्षरों को सीखो और लिख लो सभी कुछ। पर क्या आपको लगता है कि वाकई ही दुनिया भर में लिखाई की क्रांति आई है?

मुझे तो लगता है कि तीन हजार साल पहले क्रांति ाायद आते आते रुक गई। फिर उसके बाद से लिखाई की कहानी कुछ सुस्त हो गई थी। बहुत देर से अब उसमें कोई फड़कती हुई घटना नहीं घटी है। हां, लिखाई ने क्रांतिकारी जामा जरूर पहना और छपाई का रूप धारण किया-पर वह तो एक अलग ही कहानी है।

लिखाई की कहानी में असल क्रांति तो तब आएगी, जब दुनिया के सभी लोग लिखना जान जाएंगे। हमारे देश में करोड़ों लोगों का अक्षरों से कभी परिचय नहीं हुआ। लाखों बच्चे कहानियां केवल सुन सकते हैं पर नई-नई कहानियां पढ़ नहीं पाते। लिखाई की क्रांति तभी होगी जब यह बच्चे अक्षरों को अपना सकेंगे। आप उनकी क्या मदद कर सकते हैं? अपने अक्षर उनके साथ भी बांट सकते हैं? हमारे देश में शायद यह कहानी अब फिर नई अंगड़ाई ले रही है। पुकार रही है कि आप सब आओ और मदद करो, मुझमें एक नई जान लाओ। बहुत सुस्ता ली मैं, अब मैं भी तेजी से भागना चाहती हूं।

जाते-जाते आपके लिए एक आखिरी पहेली। आप सब जो यह कहानी पढ़ रहे हैं- बोलिए आप कितने अक्षरों के दोस्त हैं? भारत की कितनी लिपियां आप पहचान पाते हैं? नहीं, नहीं, पुरानी रहस्यमयी लिपियां नहीं। हम तो आज की चालू (प्रचलित) भाषाओं की लिपियों की बात कर रहे हैं। अच्छा, चलिए पहचानिए-नीचे दी गई कौन-कौन सी लिपि आप पहचान पाए? और इन सबमें जो एक शब्द लिखा हुआ है, वह भला क्या है?

(समाप्त)

-भारत ज्ञान विज्ञान समिति की पुस्तक 'लिखाई की कहानी' तथा 'चकमक' से साभार

माथापच्ची के उत्तर

1. शीला मैनेजर है, कमल खजांची और सरिता एजेंट है।
2. चिंटू के पास 5 कंचे और हमीदा के पास 7 कंचे हैं।
3. दुकानदार ने सलमा को एक 20 रुपए का नोट, तीन 10 रुपए, एक 5 रुपए का और 1 रुपए के पैंतालीस नोट दिए होंगे।
4. क्रम की अगली आकृति है- ꩜

इस क्रम में हर अंक जैसे 1,2,3, 4, 5 को उलटा करके और सीधा करके आपस में जोड़ कर लिखा गया है।

एक पुराना जापानी चित्र जिसमें लिखना सिखाया जा रहा है। उस ज़माने में लड़की को लिखना आना तो बहुत ही बड़ी बात मानी जाती थी।
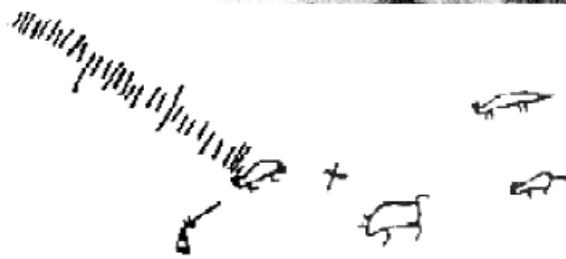
इसी ज़माने में लिखा गया एक पत्र! जी हां, अक्षरों का साथ न होने पर चित्रों का सहारा लिया उत्तरी अमरीका के ओजीबबा जनजाति के एक आदिवासी ने। भैंस और दो छोटे जानवरों की खालों के बदले (संकेत x) सौदा किया है बदूंक और तीन ऊदबिलावों की खाल का।

चमड़े पर लिखे गए गणित के जोड़ हिसाब (1700 ई0 पूर्व0)

त्रिकोण और पिरामिडों का गणित लिखा हुआ है इस चार हजार साल (१९००ई० पूर्व) पुराने पैपीरस पर।

संगीत को लिखने के लिए विशेष संकेतों का इस्तेमाल होता है। विश्व के प्रसिद्ध संगीतकार जोहान सेबैसटियन बाख द्वारा लिखे गए पाश्चात्य संगीत का एक अंश।

पैपीरस कागज पर मिस्र की लिपि में लिखी तीन हज़ार साल से अधिक पुरानी पुस्तक का एक पन्ना। यह पुस्तक हर मृतक के साथ दफनाई जाती थी। अंतिम संस्कार के समय पुरोहित इसी के अंश पढ़ते थे कि इन शब्दों के लिखे होने से मृतक को शक्ति मिलेगी जिससे वह मृत्यु के देवता (सींगों वाला) और मृत्युलोक के अन्य पशुओं से बच निकलेगा। दुनिया की कई अन्य सभ्यताओं में माना जाता था कि लिखवाई में दिव्य शक्ति होती है।

मुकुटनुमा टोपी
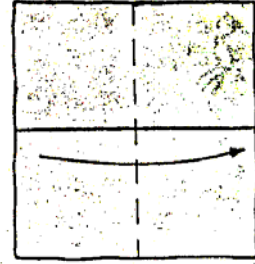
1. एक वर्गाकार कागज़ लो। चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखा पर मोड़ बनाओ। मोड़ पक्का करके वापस खोल लो।

2. अब इस चित्र में दिख रही टूटी रेखा पर से तीर की दिशा में मोड़ लो।
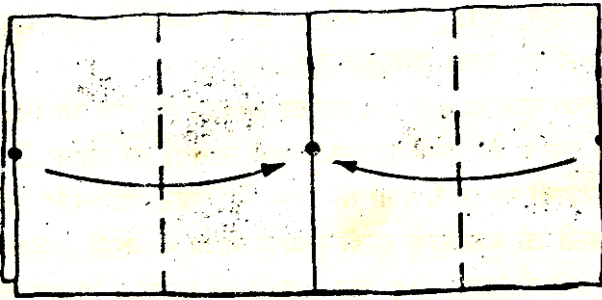
3. इस तरह। यहां से चित्रों को थोड़ा बड़ा करके दिखाया गया है। इस चित्र में दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बनना है। केवल ऊपरी सतह को ही मोड़ना।

4. देखो इस तरह की आकृति बनेगी। अब इस आकृति को पलट लो।
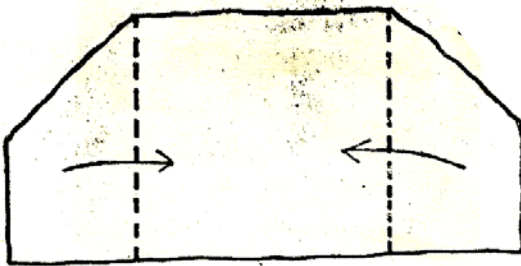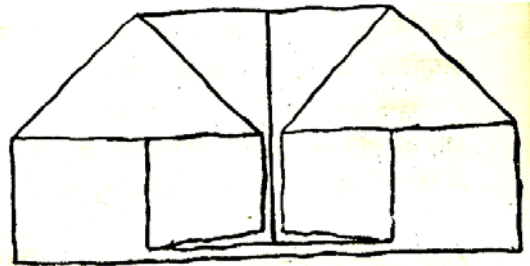
5. इस चित्र में दिखाई गई टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशाओं में मोड़ बनाओ।
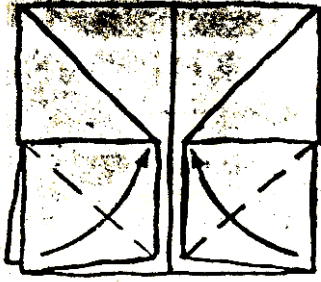
6. इस तरह की आकृति बनेगी। अब इस आकृति में नीचे की ओर दिखाई दे रही टूटी रेखाओं पर से तीर की दिशा में मोड़ बनाओ। सिर्फ ऊपर की दोहरी सतहों को ही मोड़ना।
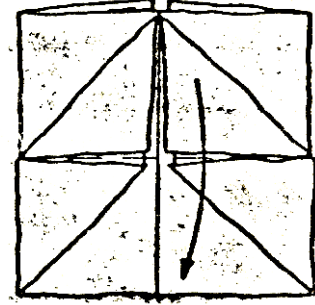
7. इस तरह अब नीचे की ऊपरी सतह को तीर की दिशा में मोड़ लो।

8. इस तरह। अब इस आकृति को पलट लो। और चित्र-6 और चित्र-7 की क्रियाएं दोहराओ।
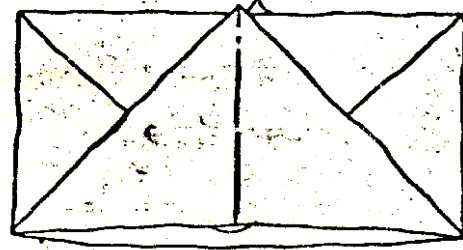
9. उसके बाद तुम्हें ऐसी आकृति मिलेगी। इसके नीचे के खुले सिरों को पकड़कर चौड़ा करो।
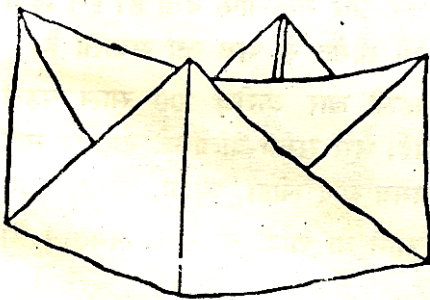
10. दो उठे तिकोन तो तुम्हें आसानी से दिख जाएंगे। और दो तिकोन निकालने के लिए बीच के उठे हिस्से को नीचे की ओर धीरे से थोड़ा दबाओ।
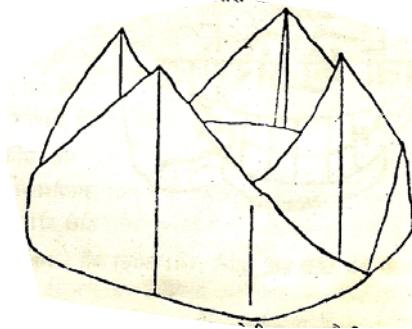
11. इस तरह की टोपी बनेगी। मुकुट जैसी यह टोपी तुम अपने सिर के नाप की बनाना चाहो तो किसी अखबार का एक पन्ना लेकर उससे बनाओ।

सुनो जी, छोटू अब बड़ा हो गया है। उसे उड़ना सिखा देना चाहिए।
मम्मी, हमारे स्कूल में उड़ने का सब्जेक्ट भी है।

रहने दो, यह कम्प्यूटर का जमाना है। हां तो बेटा, दिखा क्या बताया है..
अपने पंखों को झाड़ो। पंख ऊपर उठाओ।

हां, हां। अब माडर्न जमाने में पुराने घिसे-पिटे तरीके थोड़े ही चलेंगे...
लेकिन उड़ना तो उड़ना है...
काकपुराण
कथा : अंशुमाला
चित्र :
हवा को नीचे दबाओ।
नीचे दबाने को कुछ है ही नहीं।

बेवकूफ! जैसे लिखा है, वैसे करो। शरीर को ढीला छोड़ दो।
लेटने को किसने कहा? ऊपर उठो
जब हवा में ऊपर उठने लगो, तो परों को ऊपर नीचे हिलाओ।
लेकिन मैं तो हवा में उठा ही नहीं।
गधे कहीं का! कुछ नहीं सीखता। मैं जब तुम्हारी उम्र का था, सब ध्यान से सुनता था।
मेरी सुन बेटा...
चुप रह, तुझे क्या मालूम
चल मेरे साथ छलांग लगा।
कितनी भी हो किताबी पढ़ाई
इससे किसको अकल है आई
जितना तुम जिंदगी को टटोलो
उतने अकल के दरवाजे खोलो।
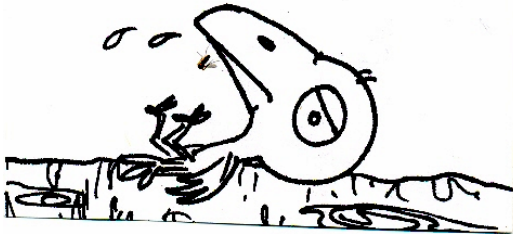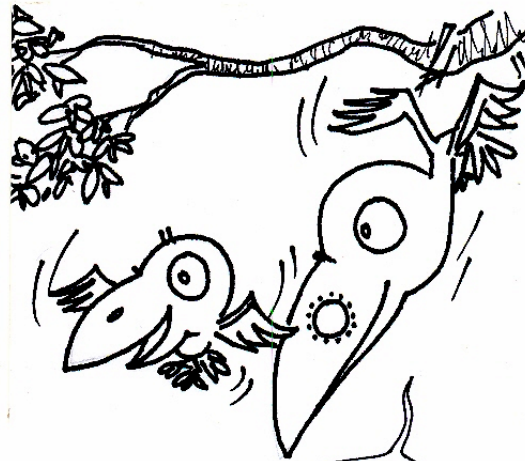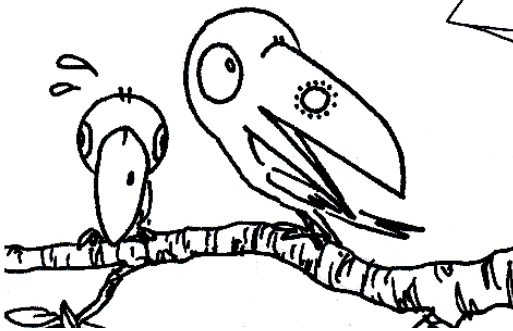
रोचक जानकारी

घोड़ा तेज़ दौड़ा या रेलगाड़ी

करीब डेढ़ सौ साल पहले, जब पहले पहल रेलगाड़ी का आविष्कार हुआ था, ''टाम थम्ब'' नामक रेलगाड़ी के साथ एक घोड़े ने दौड़ लगाई। घोड़ा जीत गया।

पहली चलने लायक रेलगाड़ी रिचर्ड ट्रेविथिक नामक एक अंग्रेज द्वारा बनाई गई थी। उसने उस रेलगाड़ी को नाम दिया ''हो सके तो मुझे पकड़ लो''। वह इतनी धीरे चलती थी कि ज्यादातर लोग भाग कर उसे पकड़ सकते थे।

पहले- पहल की बनी रेलगाड़ी में सब से मशहूर है वह जो जौर्ज स्टीफनसन ने बनाई थी (उनको रेलगाड़ी का अविष्कारक भी कहा जाता है)। इस गाड़ी का नाम था ''द राकेट''। वह एक घंटे में अड़तालीस किलोमीटर जा सकती थी। उस ज़माने में (एक सौ पच्चीस साल पहले) यह गति बहुत तेज़ समझी जाती थी। अब भारत में ही बहुत सी रेलगाड़ियां हैं जो 100 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से चलती हैं। दुनिया में अब चुम्बक की शक्ति से दौड़ने वाली ट्रेनें हैं जो 400-500 किलोमीटर की रफ्तार से दौड़ती हैं ये ट्रेनें पहियों पर चलने की बजाय खूब दबाई हुई हवा की परत पर दौड़ती हैं। घर्षण कम होने के कारण ये बहुत तेज चल सकती हैं।

हाथियों का कब्रिस्तान

कुछ लोगों का मानना है कि बूढ़े और बीमार हाथी मरने के लिए एक खास स्थान चुनते हैं। इसका प्रमाण यह है कि हाथियों की हड्डियों के ढेर कुछ विशेष स्थानों पर मिलते हैं। हाथियों की और भी मज़ेदार आदतें हैं। ये झुण्डों में रहते हैं। स्वस्थ हाथी अक्सर घायल और बीमार हाथी की रक्षा करते हैं। यहां तक कि उसकी चलने में भी मदद करते हैं। क्या यही बात सब मनुष्यों के लिये कही जा सकती है?

जहां नींव हो पानी की

घर बनाना हो तो सबसे पहले लोग ज़मीन जुटाते हैं। मगर कुछ लोग घर ज़मीन बिना ही बना लेते हैं। ये हैं मणिपुर राज्य के करीब पांच हजार मछुआरे। और मछुआरे भी कैसे! ये पानी पर उगी घास पर ही घर बना लेते हैं। मणिपर के लोकतक तालाब में दिखते हैं इनके घर। ये 'फूमदी' घर कहलाते हैं।

फूमदी- यानी पानी में पाए जाने वाले पौधे और घास के झुंड। ये तालाब की ढीली मिट्टी से बंधे रहते हैं। घर बनाने के लिए फूमदी तालाब से जमा की जाती है। मज़बूत घर के लिए चाहिए घनी घास की फूमदी। फूमदी को तालाब में जहां चाहे ले जाओ। इसे बड़ी-बड़ी लकड़ियों पर टिका दो। लकड़ियों को तालाब के तले तक पहुंचना चाहिए। और फिर इस पर खड़ा कर लो बांस का अपना घर। कभी तो बना बनाया घर भी खरीदा जा सकता है। वह भी तीन हज़ार रुपए में! दो बातें ज़रूरी हैं। पहला, घर ठीक से टिका हो। वरना तूफान आने पर यह कहीं और पहुंच जाएगा। और बेचारे डाकिए की तो शामत समझो। चिट्ठी पहुंचाने के लिए पूरा तालाब ढूंढना पड़ेगा। दूसरा, घर में ज्यादा लोग न हों। कहीं किसी ने
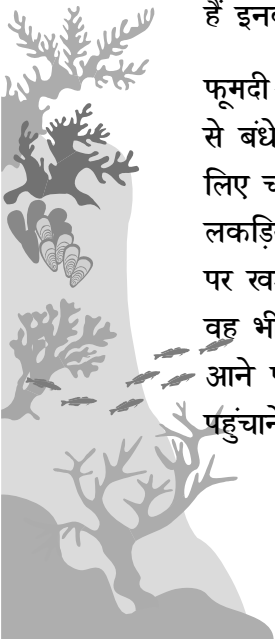
शादी–ब्याह में मेहमान बुला लिए–तब दावत तालाब के नीचे समझो। फूमदी में रहने से बड़ा फायदा है– बाज़ार जाने की ज़रूरत ही नहीं पड़ती। खाने लायक सब्ज़ी और मछली तालाब में ही मिल जाती है।

हर साल कुछ महीने तालाब का पानी सूख जाता है। और फूमदी पहुंच जाती हैं तालाब के तले में। इससे एक बड़ा फायदा है। फूमदी के पौधे ज्यादा घने हो जाते हैं। तालाब की मिट्‌टी में उन्हें और पनपने का मौका जो मिलता है। बरसात में तालाब दोबारा पानी से भर जाता है। और फूमदी भी ऊपर आ जाती हैं। मगर अब लोकतक झील में एक बड़ा काम शुरू हो रहा है– पानी से बिजली बनाने का। इसके लिए एक बांध भी बनाया गया है। इससे तालाब में साल भर पानी रहता है। फूमदी हमेशा पानी पर तैरती है। इसलिए अब वे उतनी घनी नहीं हो पातीं।

लोकतक तालाब में ही है केइबुल लामजाओ। यह नाम है एक बहुत बड़ी फूमदी का। दुनिया की यह इकलौती तैरती हुई जगह है जहां एक पूरा जंगल बसा है जिसमें बहुत से जंगली जानवर रहते हैं। मगर इनके रहने की जगह को ही अब खतरा है। केइबुल लामजाओ अब हमेशा पानी पर रहता है। इसलिए इसकी मिट्‌टी कमज़ोर हो रही है। इसमें जानवर कब तक रह पाएंगे–यह समय ही बताएगा।

–निरंतर की पुस्तक 'क्या आप जानते हैं' से साभार

केइबुल लामजाओ भारत का ही नहीं, संसार का इकलौता तैरता हुआ राष्ट्रीय उद्यान है जो 40 वर्ग किलोमीटर बड़े क्षेत्र में फैला है। राष्ट्रीय उद्यान एक सुरक्षित और मूल्यवान बड़े जंगल को कहते हैं। यहां की खासियत है संगाई नाम के नाचने वाले हिरन। यहां और भी बहुत से जंगली जानवर रहते हैं। इसमें घूमने जाओ तो थोड़ा सावधान रहना–तुम्हारे नीचे ठोस जमीन नहीं है, कहीं पानी में अंदर ही न घुस जाओ!

छुट्टी

–रवीन्द्रनाथ टैगोर

बच्चों के सरदार फटिक चक्रवर्ती के दिमाग में एक नई बात आई। नदी के किनारे साल का जो बड़ा सा तना नाव का मस्तूल बनाने के लिए रखा हुआ था, उसे लुढ़का कर बच्चे ले जाएं ।

जिस व्यक्ति की यह लकड़ी थी, जरूरत के समय उसे कितनी असुविधा होगी, या वह इसे न पाकर कितना हैरान या नाराज़ होगा, यह सोचकर बच्चों ने अपने सरदार के इस प्रस्ताव पर हां भर दी।

कमर कसकर सभी बच्चे मन लगाकर काम शुरू ही करने वाले थे कि फटिक का छोटा भाई मक्खनलाल गंभीर होकर उस तने पर जाकर बैठ गया। लड़के उसकी गंभीर मुद्रा देख कर थोड़ा उदास हो गए।

एक ने आगे बढ़कर उसे ज़रा-सा हिलाने डुलाने की कोशिश की, पर वह अविचलित भाव से बैठा ही रहा। यह तत्वज्ञानी लड़का सोच रहा था कि खेलकूद आदि बड़ी बेकार की चीज़ है।

तभी फटिक डपट कर बोला, ''देख बड़ी मार मारूंगा। खैरियत चाहता है तो अभी यहां से उठ जा।''

यह सुनकर मक्खन और भी अच्छी तरह जमकर तने पर बैठ गया।

ऐसी हालात में दूसरे बच्चों के सामने अपना मान बचाने के लिए, फटिक को चाहिए था कि तुरन्त उसके गाल पर कस कर थप्पड़ जड़ दे । पर ऐसा करने की उसकी हिम्मत नहीं हुई । ऊपर से उसने ऐसा भाव दिखाया मानो यदि वह चाहे तो वह मक्खन को अच्छी तरह डांट डपट सकता है, पर उसने ऐसा किया नहीं, क्योंकि उसके दिमाग में पहले से भी एक और बढ़िया खेल की बात आ गई थी । उसने प्रस्ताव दिया कि बच्चे मक्खन के साथ ही इस तने को ठेल कर ले जाएं ।

मक्खन ने सोचा, तने पर जमकर बैठे रहने से उसका मान बढ़ेगा । पर हर मान के साथ कुछ विपत्ति की भी आशंका रहती है, यह बात न उसके और न ही दूसरे बच्चों के दिमाग में आई ।

लड़के कमर कसकर पेड़ के उस मोटे से तने को मिल कर ठेलने लगे.. 'मारो धक्का, हईयो, शाबाश, जवानों, हईयो....।' फिर तना जैसे ही थोड़ा लुढ़का, मक्खन अपनी सारी गंभीरता, मान और तत्वज्ञान के समेत ज़मीन पर लुढ़क पड़ा ।

खेल के शुरू में ही इस तरह का आशातीत फल पाकर बच्चे बड़े खुश हुए, पर फटिक कुछ परेशान हो उठा । मक्खन तुरंत जमीन पर से उठा और फटिक पर सवार होकर उसे अंधाधुंध पीटने लगा । उसका नाक-मुंह नोच नाचकर रोते रोते घर की तरफ चला गया ।

फटिक कास के कुछ डंठल तोड़कर घाट पर बंधे एक नाव पर बैठा-बैठा डंठल चबाता
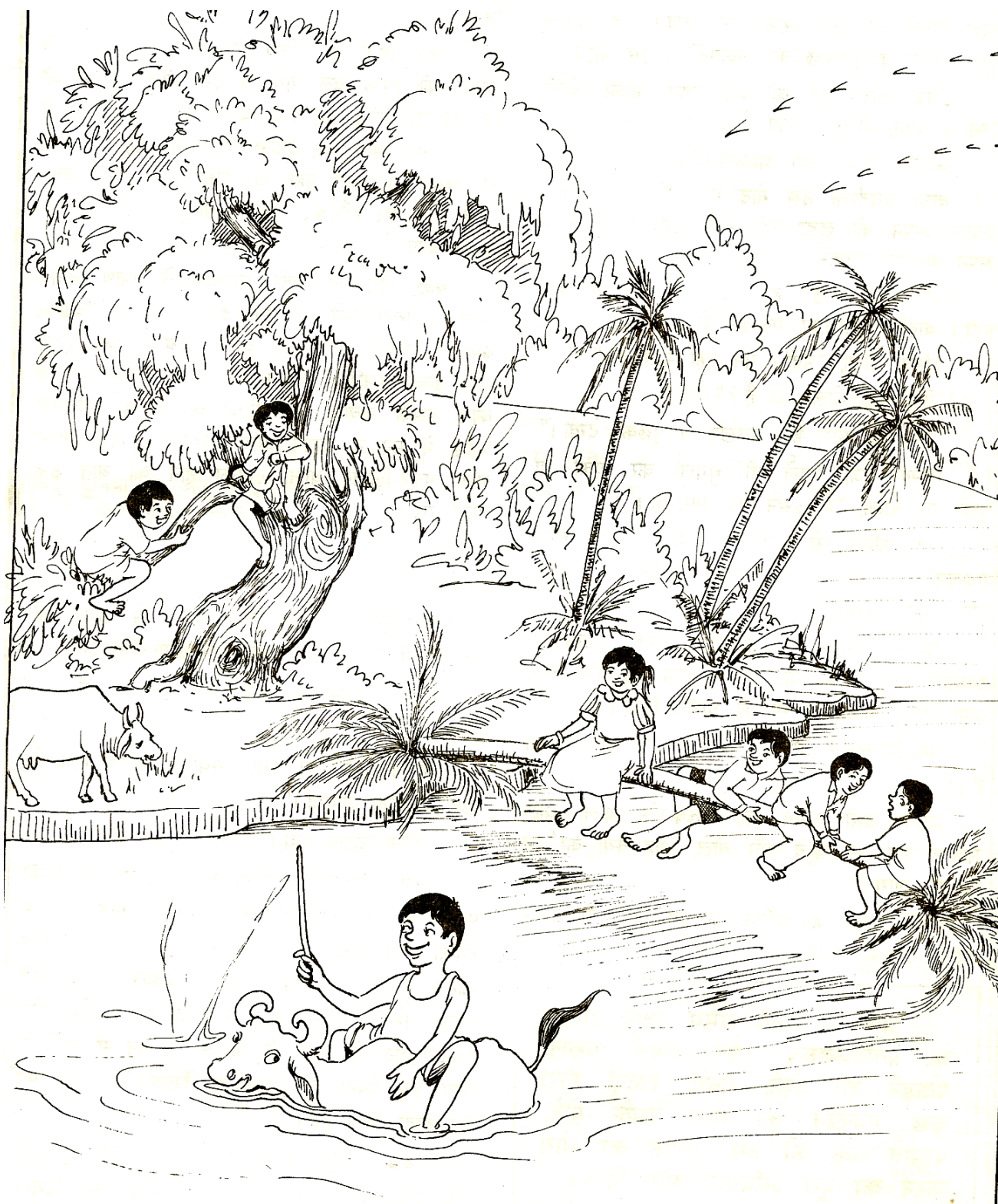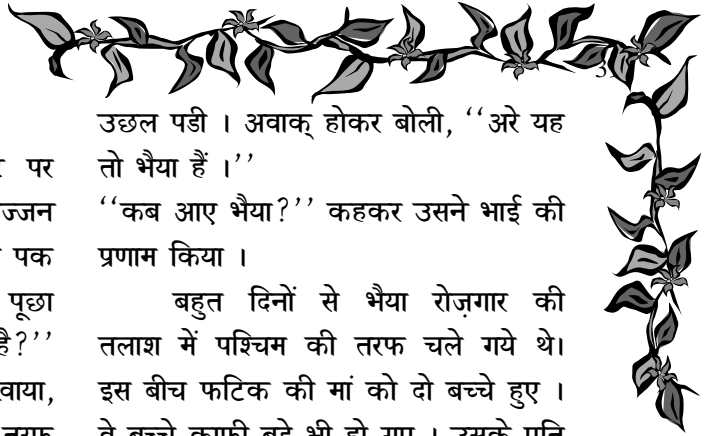
रहा ।

उसी समय एक परदेसी नाव घाट पर आकर रुकी । एक अधेड़ उम्र के सज्जन जिनकी दाढ़ी तो कच्ची थी पर सिर के बाल पक चुके थे, नाव से उतरे । उन्होंने फटिक से पूछा ''चक्रवर्ती महाशय का मकान कहां है?'' फटिक ने कास का डंठल चबाते हुए दिखाया, ''वो वहां रहा। '' पर उसने सचमुच किस तरफ़ इशारा किया, यह किसी की समझ के बाहर की बात थी । उन सज्जन के फिर पूछा, ''किस तरफ?'' फटिक ''नहीं मालूम'' कह कर पहले की तरह डंठल का रस चूसने लग गया । वह सज्जन दूसरे लोगों से पूछताछ कर चक्रवर्ती के घर पहुंचे ।

इसके थोड़ी देर के बाद बाघा आकर बोली, ''फटिक भैया, मां बुला रही है ।''
फटिक बोला, ''नहीं आऊंगा ।''

बाघा ज़बर्दस्ती उसे गोद में उठा कर ले गई । फटिक अपने को छुड़ा नहीं सका, इसलिए गुस्से से अपने हाथ पैर पटकने लगा । फटिक को देखते ही उसकी मां उस पर बरस पड़ी। बोली, '' तूने फिर मक्खन को मारा है?''
यह फटिक से सहा नहीं गया । झट जाकर मक्खन को कसकर एक थप्पड़ जमाते हुए बोला, ''फिर झूठ बोलता है। ''

मां ने मक्खन की तरफ़दारी करके फटिक को झकझोर कर उसकी पीठ पर कसकर दो तीन धौल जमा दिए। फटिक ने मां को धक्का दिया।

मां चिल्लाकर बोली, ''ऐ तू मां पर हाथ उठाता है ।''

ठीक उसी समय वह कच्चे पके वालों वाले सज्जन वहां आ पहुंचे और बोले, ''यह क्या कर रहे हो तुम लोग?''

उन्हें देखते ही फटिक की मां खुशी से उछल पडी । अवाक् होकर बोली, ''अरे यह तो भैया हैं ।''
''कब आए भैया?'' कहकर उसने भाई की प्रणाम किया ।

बहुत दिनों से भैया रोज़गार की तलाश में पश्चिम की तरफ चले गये थे। इस बीच फटिक की मां को दो बच्चे हुए । वे बच्चे काफ़ी बड़े भी हो गए । उसके पति का देहान्त हो चुका था, पर भैया से उसकी मुलाकात नहीं हो सकी थी। आज बहुत सालों बाद घर लौटकर विश्वंभर बाबू अपनी बहन को देखने आए थे ।

कुछ दिन तो बड़ी धूमधाम के साथ बीते। अन्त में विदा लेने के एक दो दिन पहले विश्वंभर बाबू ने अपनी बहन को बुलाकर बच्चों की पढ़ाई और उनके मानसिक विकास के बारे में कुछ पूछताछ की। इसके जवाब में फटिक के उद्दण्ड आचरण, पढ़ाई में मन न लगाने और मक्खन के बड़ा शान्त, भला, पढ़ने लिखने वाला लड़का होने की बात उन्हें बताई गई।

उनकी बहन ने कहा, ''फटिक ने मुझे तंग कर छोड़ा है।''

यह सुनकर विश्वंभर बाबू बोले, ''मैं फटिक को कलकत्ते में अपने पास रखकर पढ़ाऊंगा लिखवाऊंगा ।''

विधवा बहन ने भाई का यह पस्ताव मान लिया ।

मां ने फटिक से पूछा, ''क्यों रे फटिक, मामा के साथ कलकत्ता जाएगा?''
फटिक उछल पड़ा। बोला,''जाऊंगा।''

यद्यपि फटिक को विदा करने में मां को किसी प्रकार की आपत्ति नहीं थी, क्योंकि उसके मन में हमेशा भय बना रहता कि क्या पता किसी दिन फटिक मक्खन

को पानी में ही न धकेल दे या कभी उसका सिर ही न फोड़ दे, या फिर और कोई दुर्घटना घटा दे, फिर भी फटिक के मन में जाने के लिए इस प्रकार की उत्सुकता देखकर मन ही मन वह थोड़ी खिन्न हुई ।

''कब जाएंगे, किस समय जाएंगे?'' पूछ पूछ कर फटिक ने अपने मामा को तंग कर दिया। उत्साह के मारे रात को नींद नहीं आ रही थी। अन्त में चलते समय अपने आनन्द के प्रतीकस्वरूप उसने अपनी मछली पकड़ने की बंसी, पतंग, लटाई सारा कुछ मक्खन को तथा उसके पोते, परपोते तक को उस सम्पत्ति का भोग करने का पूरा अधिकार सौंप दिया।

कलकत्ते में मामा के घर जाकर सबसे पहले उसका परिचय मामी से हुआ। परिवार में एक आदमी बढ़ गया, इस बात से मामी बड़ी खुश हुई हो, ऐसा नहीं कह सकते। वह अपने तीन लड़कों को लेकर अपनी मर्जी मुताबिक घर बसाकर रह रही थी। इस बीच अचानक तेरह साल के अपरिचित, अशिक्षित, गंवार लड़के को लाने पर घर में किस तरह आन्दोलन की संभावना हो सकती है, विश्वंभर में यदि जरा भी बुद्धि होती, तो इसका अंदाज कर वह लड़के को घर में लाते ही नहीं।

तेरह-चौदह साल के लड़के की तरह की बला शायद दुनिया में और कोई नहीं है। उससे न तो घर की कोई शोभा बढ़ती है, न ही वह किसी के काम आता है, और न ही उसका साथ किसी को अच्छा लगता है। उसकी जुबान से बाल-सुलभ बातें बनावटी लगती हैं, और बड़ी-बड़ी बातें सुनकर लगता है वह सयाना हो चुका है। यह कुछ भी बोले, लगता है बड़ा बातूनी है। कपड़े लत्ते में न अंट कर वह एकाएक बढ़ जाता है, लोग इसे भी उसी की गलती मानते हैं। उसके बचपन का लालित्य और आवाज़ की मधुरता एकाएक गायब हो जाती है। लोग मन ही मन सभी प्रकार की गड़बड़ी के लिए उसे ही दोषी ठहराते हैं। बचपन और जवानी के बहुत से अपराधों को माफ किया जा सकता है, पर इस समय कोई स्वाभाविक अनिवार्य श्रुटि भी असहनीय सी लगने लगती है।

इस उम्र का बच्चा भी मन ही मन समझ जाता है कि वह दुनिया में कहीं भी फिट नहीं हो रहा है। इसलिए वह हमेशा लज्जित और क्षमाप्राथी बना रहता है, हालांकि इस उम्र में उसका मन थोड़ा-सा भी प्यार पाने के लिए आतुर रहता है। इस समय अगर उसे किसी के साथ दोस्ती होती है या वह किसी का स्नेह पाता है तो उसके लिए वह अपने को बेच तक देता है। पर इस समय उसे कोई स्नेह भी नहीं देना चाहता, क्योंकि लोग इसे उसका मन बढ़ाना समझ बैठते हैं। इसलिए इस उम्र के बच्चे का चेहरा और उसके भाव कुछ-कुछ लावारिस कुत्ते के समान होते हैं।

इसी वजह से मां को छोड़कर कोई दूसरी अपरिचित जगह बच्चे के लिए नरक के समान होती है। उसके प्रति चारों तरफ का स्नेहहीन वातावरण उसे हर पल कांटे की तरह चुभता है। इस उम्र में लड़के को आम तौर पर कोई भी स्त्री स्वर्गलोक की परी की तरह दुर्लभ जीव मालूम होने लगती है, इसलिए उसकी तरफ से उपेक्षा उसके लिए अत्यन्त असहनीय हो उठती है।

घर में इतना निरादर, उस पर जगह इतनी छोटी। खुली हवा में सांस लेने का कोई उपाय नहीं था। दीवारों के बीच घुट कर उसे बार-बार अपना गांव याद आता। बड़ी सी एक पतंग लेकर मैदान में दौड़कर उसे उड़ाना, उसके बाद खुद का रचा हुआ गाना ऊंची आवाज़ में गाते हुए अलसाए ढंग से नदी के किनारे घूमना और फिर जब मर्ज़ी, नदी में कूदना सब कुछ उसे बेहद याद आता। छोटी सी नदी में तैरने में क्या ही मजा आता था।
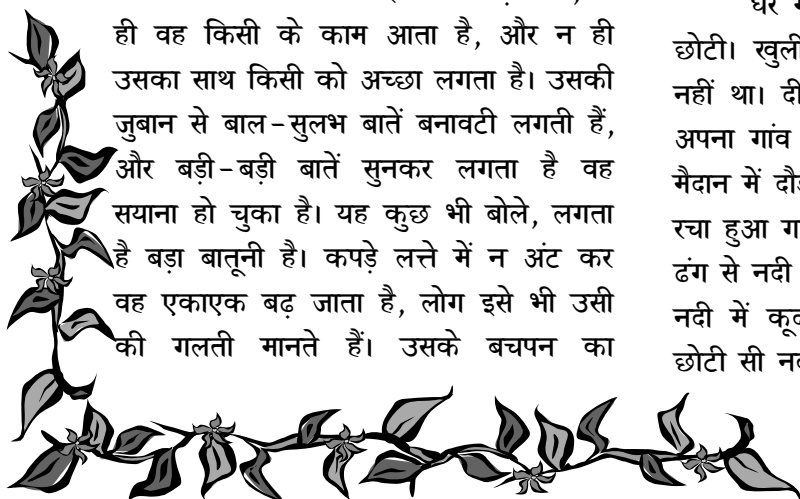
वे सारे लड़के, उसका वह अपना दल, उपद्रव मचाने की आजादी और सबसे ऊपर उसकी अत्याचारिणी, कठोर मां, सब कुछ दिन-रात उसके निरुपाय मन को अपनी तरफ खींचते रहते।

जानवर की तरह एक नासमझ प्यार, सिर्फ पास जाने की एक आतुर इच्छा, न देख पाने के कारण एक अव्यक्त व्याकुल भाव-गोधूलि बेला में मातृहीन बछड़ा जिस तरह स्नेहातुर भाव से मां, मां, पुकारता गौ मां के पीछे भागता है, उसी तरह उस शर्मीले, सदा संकुचित दुबले-लम्बे बदसूरत बालक का मन भी आलोड़ित होता रहता था।

स्कूल में फटिक की तरह बेवकूफ और पढ़ने में लापरवाह लड़का दूसरा कोई न था। कोई भी प्रश्न पूछे जाने पर वह मुंह फाड़े देखता रहता। जब मास्टर उसे मारता तो बोझ से लदे गधे की तरह वह चुपचाप मार खाता। बच्चों को जब खेलने की छुट्टी मिलती, वह खिड़की के पास खड़ा दूर बनी छतों की तरफ एकटक देखता रहता। जब दोपहर की धूप में किसी-किसी छत पर एकाध बच्चा थोड़ी देर के लिए दिखाई पड़ता तो फटिक का मन उससे खेलने के लिए चंचल हो उठता था।

एक दिन मन में ही प्रतिज्ञा कर और बहुत हिम्मत जुटाकर उसने मामा से पूछा ''मामा जी मां के पास कब जाऊंगा?''

मामा ने कहा, ''स्कूल की छुट्टी हो जाएगी, फिर चलेंगे।''

कार्तिक के महीने में दशहरे की छुट्टी होने वाली थी। पर उसमें तो अभी बड़ी देर थी।

एक दिन फटिक ने स्कूल की किताब खो दी। एक तो वह ऐसे भी आसानी से पाठ नहीं तैयार कर पाता था, उस पर से किताब खोकर उसने अपना हाल और भी बुरा बना लिया। मास्टर ने हर रोज उसे पीटना शुरू कर दिया। स्कूल में उसकी यह हालत हो गई कि उसके ममेरे भाई उसे अपना रिश्तेदार बताने में संकोच करने लगे। फटिक पर लगाए गए किसी प्रकार के लांछन पर दूसरे बच्चों से अधिक खुशी ममेरे भाई मनाते।

जब स्कूल में जाना एक प्रकार से मुश्किल हो उठा, एक दिन फटिक अपनी मामी के पास आकर अपराधी की तरह बोला, ''मेरी किताब खो गई है।'' मामी होंठ बिचका कर नाराजगी से बोली, ''अच्छा ही किया। महीने में पांच बार मैं तुम्हें किताबें खरीद कर नहीं दे सकती।''

फटिक कुछ बोले बिना वहां से चला आया.....................वह दूसरे के पैसे बर्बाद कर रहा है, यह सोच कर अपनी मां के प्रति दुख से उसका मन भर आया। हीनता और दरिद्रता के भाव से उसका सिर मिट्टी में झुक गया।

स्कूल से लौटकर उसी रात उसके सिर में दर्द होने लगा। शरीर में कंपकंपी-सी होने लगी। वह समझ गया कि उसे बुखार आने वाला है, साथ ही यह भी समझ गया कि उसका बीमार पड़ना खामखाह मामी पर बोझ डालना होगा। मामी उसकी इस बीमारी को बिना कारण अपने पर जुल्म ढोना समझ कर मन ही मन उसे कोसेगी। बीमारी के समय इस अकर्मण्य और निर्बोध बालक की सेवा दुनिया में अपनी मां के सिवा कोई और करेगा, इसकी संभावना ने ही शर्मिन्दा उसे बना दिया।

दूसरे दिन सुबह फटिक कहीं नहीं दिखाई पड़ा। चारों तरफ पड़ोसियों से पूछताछ करने पर भी उसका अता-पता नहीं लगा।

उस दिन रात से ही लगातार सावन की बरसात हो रही थी। फटिक को खोजने के

लिए वे लोग भीगते रहे। अन्त में जब फटिक कहीं भी नहीं मिला तो विश्वंभर बाबू ने पुलिस को खबर की।

सारा दिन बीत गया। शाम को विश्वंभर बाबू के घर के सामने पुलिस की एक जीप आकर खड़ी हुई। उस समय भी लगातार झिर-झिर पानी बरस ही रहा था। सड़क घुटने तक पानी में डूब गई थी।

पुलिस के दो आदमियों ने फटिक को पकड़ कर गाड़ी से उतारा। फटिक सिर से पैर तक भीगा हुआ था। उसके सारे शरीर में कीचड़ लगा हुआ था, आंख-मुंह लाल हुए पड़े थे। वह थर-थर कांप रहा था। विश्वंभर गोद में भरकर उसे अन्दर ले गए।

फटिक को देखते ही मामी बोल पड़ी, ''क्यों भई! पराए लड़के के लिए हम क्यों मुसीबत मोल लें, उसे उसके घर भेज दो।''

सचमुच सारे दिन चिन्ता के मारे उसने अच्छी तरह खाया भी नहीं था। अपने साथियों के साथ भी खिट-खिट हो गई थी। फटिक रोता हुआ उठ बैठा। बोला, ''मैं मां के पास जा रहा था। ये लोग पकड़ कर वापस ले आए हैं।''

बच्चे का बुखार बढ़ता ही जा रहा था। सारी रात बड़बड़ाता रहा। विश्वंभर बाबू डाक्टर को बुलाकर ले आए।

फटिक ने अपनी लाल-लाल आंखें छत की तरफ देखते हुए खोलीं, फिर बोला-''मामा जी, मेरे स्कूल में छुट्टी हो गई है क्या?''

विश्वंभर बाबू रुमाल से आंसू पोंछकर स्नेह से फटिक के बुखार से तपे हाथ को अपने हाथों में लेकर उसके करीब जाकर बैठे। फटिक फिर कुछ बड़बड़ाने लगा। ''मां मुझे मत मारना मां। मैं सच कह रहा हूं, मैंने कोई गलती नहीं की।''

दूसरे दिन, दिन में थोड़ी देर के लिए फटिक को होश आया। किसी को देखने की उम्मीद में वह कमरे के चारों तरफ अर्थहीन दृष्टि से देखता रहा। फिर निराश होकर चुपचाप दीवार की तरफ मुंह फेरकर सो गया।

उसके मन के भाव को पढ़कर विश्वंभर बाबू फटिक के कान के पास झुककर बोले, ''फटिक, तुम्हारी मां को लिवा लाने के लिए मैंने आदमी भेज दिया है।''

दूसरा दिन भी बीत गया। डाक्टर चिन्तित और उदास होकर बोले, ''हालत गम्भीर है।''

धीमी रोशनी में विश्वंभर बाबू फटिक के सिरहाने बैठकर हर पल उसकी मां के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे।

फटिक खलासियों की तरह बकने लगा, ''एक घुमाव नहीं मिला। दो घुमाव नहीं मि....ल...।''कलकत्ते आते समय उसका थोड़ा रास्ता स्टीमर से तय करना पड़ा था। उसने देखा था कि खलासी लोग रस्सी फेंक कर पानी नापते थे और सुर में नाम पुकारते थे।

बुखार में फटिक उन्हीं खलासियों की नकल कर पानी नाप रहा था। जिस अथाह समुद्र में वह जा रहा था, उसकी गहराई की थाह उसका बाल-मन रस्सी डालकर नाप नहीं पा रहा था।

ठीक उसी समय फटिक की मां आंधी की तरह कमरे में घुसते ही ज़ोर ज़ोर से रोने लगी। विश्वंभर बाबू ने बड़ी मुश्किल से उसे चुप कराया। फटिक की मां फटिक के बिस्तर पर गिरकर ऊंची आवाज़ में रो-रोकर कह रही थी, ''फटिक! सोना, माणिक मेरे!''

फटिक मानों बड़ी आसानी से उसके जवाब में बोला, ''क्या?''

मां बोली, ''बेटा फटिक, मेरे अच्छे बच्चे।''

फटिक ने धीरे से करवट बदली, फिर किसी की तरफ देखे बिना धीरे से बोला, ''मां, मेरी छुट्टी हो गई है मां, मैं अब घर जा रहा हूं।''

-संप्लव से साभार
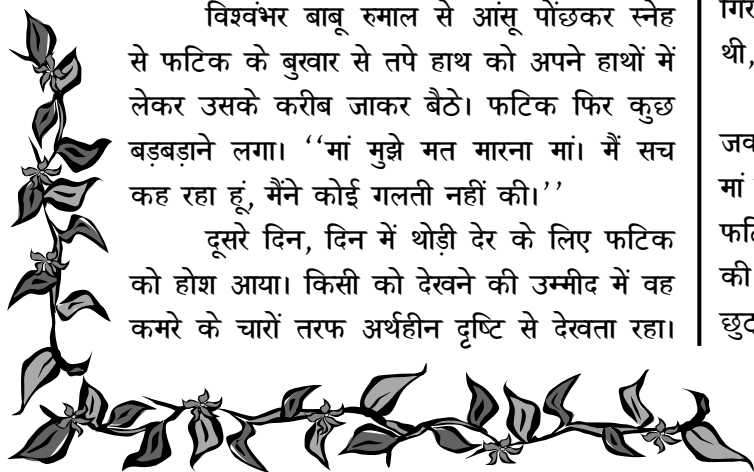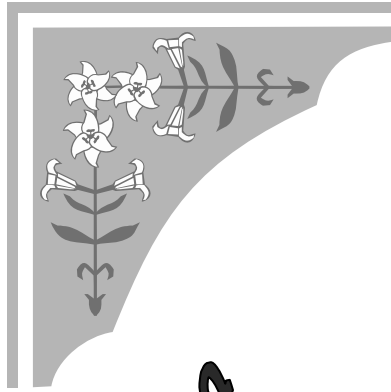
स्वाद के नाम पर धोखा

–संजीव अत्री से प्राप्त जानकारी पर आधारित

'क्या इसमें तम्बाकू है?' लड़की पूछती है।

'0 प्रतिशत तम्बाकू, 100 प्रतिशत स्वाद।' लड़का कहता है।

समझ गये न, किसकी बात हो रही है? टी वी पर पान मसाला के विज्ञापन की। इस विज्ञापन के जरिये एक झूठा संदेश देने की कोशिश की जा रही है कि बिना तम्बाकू वाला पान मसाला कोई नुकसान नहीं करता। यह एक बड़ा झूठ है जिसे बढ़ावा देने वाली बड़ी बड़ी कम्पनियां हैं। इनकी पान मसाला से बड़ी कमाई है। दूसरी ओर बड़ी फिल्मी हस्तियां हैं जिन्हें विज्ञापन देने के लिये बड़ी रकम मिलती है। इन्हें इससे क्या मतलब कि इस धीमे जहर के जरिये वे लोगों को एक भयानक जीवन की ओर धकेल रहे हैं, जिसमें छोटे बच्चे भी शामिल हैं? इसके स्वाद के गुलाम न बच्चे जानते हैं, न बड़े, कि वह क्या खा रहे हैं। कई बार तो मां बाप खुद बच्चों को इसे खाने देते हैं, यह समझकर कि केवल तम्बाकू ही नुकसानदेह होता है, पान मसाला नहीं।

सच बात तो यह है कि पान मसाला, मीठी चुटकी, मीठी सुपारी, गुटखा या माउथ फ्रेशनर, सभी नामों से आने वाला यह पदार्थ बेहद नुकसानदेह है। यह एक धीमे जहर की तरह काम करता है।

आइये देखें गुटखा क्या है!

अगर गुटखे के पाउच या डिब्बे को ध्यान से देखें तो उसपर बहुत बारीक अक्षरों में लिखा होगा– 'स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है।' इन बारीक अक्षरों के कारण इसके ऊपर किसी का ध्यान नहीं जाता। कम्पनियां जानबूझ कर इसे बहुत छोटा लिखती हैं ताकि इस पर ध्यान न जाए। इसे लिखना उनकी कानूनी मजबूरी है। लेकिन लोग इस चेतावनी को या तो पढ़ते नहीं या गंभीरता से नहीं लेते। लोग सोचते हैं कि यह केवल हानिरहित मीठी सुपारी ही है।

पानमसाले में सुपारी, चूना, कत्था डला होता है। अक्सर कत्थे की जगह कपड़ा मिलों से निकला

सस्ता हानिकारक रसायन गैम्बीयर भी डाला जाता है। इसमें खुशबू और ठंडक के लिये मैन्थोल डाला जाता है। बहुत बार पैसा बनाने के लिये कई तरह के घटिया और मिलावटी पदार्थ भी इसमें होते हैं। पर पहले इसके मुख्य घटकों का नुकसान समझते हैं।

- गुटखा खाने से एक भयंकर बीमारी सामने आती है। इसका नाम है–सबम्युकस फाईब्रोसिस । यानी मुंह की चमड़ी के अन्दरूनी हिस्से का सिकुड़ जाना। मुख्यत: यह मुख, गालों के अन्दर या, जीभ या गले पर कहीं भी अपना असर दिखाता है। कई बार मुंह के अन्दर यह एक गांठ या फाईब्रोसिस का रूप धारण कर लेता है। लगातार पान मसाला खाने से यह गांठ फट जाती है। इसके फटने से मुख/ गले में खुला जख्म बनता है जिसमें से पीप, खून लगातार बहता रहता है। इसके कारण तीव्र पीड़ा बनी रहती है । जख्म सूख नहीं पाता। धीरे धीरे और अधिक बढ़ता चला जाता है। फाईब्रोसिस के रोगियों को आपरेशन करवाना पड़ता है जिसे करवाने में 8–10 घंटे का समय लगता है।
- पान मसालों में सुपारी होती है। सुपारी में एक पदार्थ होता है कोलोजन। यह एक तरह की प्रोटीन है जो जबड़ों की मांसपेशियों में जा कर उनको कठोर बना देती है, जिससे मुंह खोलने में यानी बोलने और खाना खाने में दिक्कत आती है। धीरे–धीरे हालत ऐसी हो जाती है कि रोगी खाने के लिए भी मुंह नहीं खोल पाता और फिर उसे हस्पताल में पाइप के सहारे केवल तरल चीजें ही दी जा सकती हैं। अंतिम स्थिति में मुंह केवल बटन के बराबर ही खुल पाता है । इसके लिये नियम से पान मसाला खाने वाला कोई भी व्यक्ति अपना मुंह खोलकर उसमें तीन उंगलियां डालने की कोशिश करके देखे। अगर आराम से तीन उंगलियां चली जाती हैं तो इसका मतलब है, समस्या अभी शुरू नहीं हुई है।
- पान मसालों में एक और हानिकारक तत्व है जिसे म्युटोजन कहते हैं। यह म्युटोजन कैंसर का कारण बनता है। और यह कैंसर मुंह तक सीमित न रह कर गले, मसूढ़ों, यहां तक फेफड़ों में भी चला जाता है। पान मसाला खाते रहने से मुंह के अन्दर की खाल उतरती रहती है। और इसी उतरी खाल वाले हिस्सों में म्युटोजन का प्रभाव और भी ज्यादा हो जाता है। मुंह के छोटे से छोटे जख्म को यह कैंसर में बदल देता है। तम्बाकू और तम्बाकू में पाये जाने वाले कई पदार्थ तो कैंसर का कारण हैं ही।
- पान मसाले में एक खुशबू और ठंडक देने वाला पदार्थ मैन्थोल होता है जिसका प्रभाव भी कैंसर को बढ़ावा देता है । कानूनन एक किलो पान मसाले में 0.03 मिलीग्राम मैन्थोल होना चाहिए । जबकि मसालों के निर्माता इसकी 150 गुणा मात्रा इस्तेमाल करते हैं, क्योंकि मैन्थोल ही ऐसा पदार्थ है जो गुटखा खाने वालों को इसकी लत लगाता है ।
- शीशे के आगे अपनी जीभ को देखें । यह खुरदरी और हल्की लाली लिए होती है। जीभ का यह खुरदरापन भोजन को उलटने, पलटने और निगलने में मदद करता है। सही स्वर भी

इसी कारण निकलता है। पान मसालों के लगातार प्रयोग से जीभ का खुरदरापन खत्म होने लगता है। इससे जीभ की कार्यशीलता में कमी आती है। चुलचुलाहट होती है, स्वर साफ नहीं निकलते । होंठ ढीले हो जाते हैं, और मुँह में जलन रहती है।

- ज्यादा पान मसाला खाने से जीभ ज्यादा संवेदनशील हो जाती है। आदमी नमक की साधारण मात्रा भी नहीं खा सकता, मिर्च-मसाले तो दूर की बात है । चने का दाना भी जीभ में चुभन पैदा करता है । जीभ की लाली खत्म हो जाती है और रंग सफेद हो जाता है।
- पान मसाला खाने वाले अधिकतर लोग समझते हैं कि मीठी चुटकी वाला पान मसाला कोई हानि नहीं करता। लेकिन कैंसर रिसर्च इन्स्टीट्यूट, तिरुवनन्तपुरम में खोजों से पता चला है कि यदि मीठी चुटकी को पानी में घोल कर एक एक बूंद तीस दिन तक चूहों को दी जाये तो:-चूहों की भूख मर जाती है । उनकी त्वचा पर पैपीलोमा बन जाते हैं। पेट में अम्ल (एसिड)की मात्रा भी बढ़ती है। आहार नली में अल्सर के लक्षण पाये जाते हैं।
- प्रयोग करके देखा गया कि पान मसाले को पानी में घोल कर यदि कोई ब्लेड या पिन डाल दी जाये तो वह नष्ट होने लगती है । इससे इसकी अम्लीय शक्ति का पता चलता है।
- पान मसाले से भूख कम लगती है। पेट में अम्लीयता (ऐसिडिटी) बढ़ जाती है जिससे पेट में लगातार जलन होती है।

सिरमौर जिले के विज्ञान अध्यापक श्री संजीव अत्री ने गुटखे के खतरनाक प्रभावों का पता लगाने में बहुत साल लगाए। उन्होंने सिरमौर जिले के एक सर्वे में पता लगाया कि बिकने वाले 100 में से 52 गुटखा पाउच 12 से 19 साल के बच्चे खरीदते हैं जिनमें 4 लड़कियां होती हैं। गुटखा खाने वाले 100 बच्चों में से 42 बच्चे घरवालों से छुपा कर खाते हैं। 12 बच्चे घर के सामान में से पैसे बचा कर गुटखा खरीदते हैं। 4 बच्चे चोरी करके और 10 बच्चे उधार लेकर खाते हैं। 100 छात्रों में से 56 छात्र गुटखा खाते हैं। जो लोग गुटखा खाते हैं, उनमें 100 में से 58 प्रतिशत लोग अपना मुंह पूरा नहीं खोल पाए। सबसे ज्यादा गुटखा खाने वाला 14 साल का बच्चा दिन में 29 पाउच खा जाता है।

आओ इस जहर से अपने को बचाएं।

गुटखे के शिकार !

दो नौजवानों की कहानी उन्हें के मुंह से सुनिये ।

कुर्जी, पटना के निवासी राकेश कुमार पेशे से अध्यापक हैं । वह पिछले 7 सालों से पान मसाले का सेवन कर रहे हैं । एम. ए. पास इस 28 साल के युवक का कहना है, 'गुटखे का नशा शराब के नशे से भी खतरनाक है। लाख कोशिश के बाद भी इसे छोड़ना आसान नही होता । बीमारी के डर से मैंने 5-6 बार गुटखा खाना छोड़ दिया, पर यह हमें नहीं छोड़ता। पत्रपत्रिकाओं में जब पढ़ता हूं कि गुटखा खाने से खतनाक रोग होते हैं तो बदन सिहर उठता है । गुटखा खाने से परिवार वाले भी काफी नाराज हैं । मैं रोजाना औसतन 40 रुपए गुटखा खाने खिलाने पर खर्च कर देता हूं । रोजाना ही सोचता हूं इस से पिंड कैसे छूटे ताकि मैं अपने को बचा सकूं ।

राकेश पांडे प्रतियोगिता परीक्षाओं की तैयारी कर रहे हैं लेकिन नौकरी न मिलने से उन्हें जितनी परेशानी है, उस से कई गुना वह गुटखा खाने के कारण परेशान हैं। वह बेबाक ढंग से कहते हैं, रोजना पान मसाले पर 30-35 रुपए खर्च कर रहा हूं। एक बेरोजगार युवक के लिए महीने में 1000 रुपए जुटाना एक मुश्किल काम है और वह भी ऐसे काम के लिए, जिस से बदन दिनोंदिन कमजोर होता जा रहा है । मुझे कई डाक्टरों ने बताया है कि गुटखा जानलेवा है, इस से कई भयानक बीमारियां लग जाती हैं, इलाज समय पर हुआ तो ठीक, वरना संसार से ही विदा होना पड़ता है। मैंने कई बार कोशिश की कि इस जानलेवा आदत से छुटकारा पा लूं, पर ऐसा नहीं हो पाता। जब जेब में पैसे नहीं होते तो गुटखा नहीं खरीद पाता। उस समय न तो पढ़ने में मन लगता है और न ही कोई काम करने की इच्छा होती है। एक अजीब तरह की बेचैनी महसूस होती है। मैं मानता हूं कि गुटखा एक ऐसा खतरनाक जहर है, जिस से आदमी धीरे-धीरे अंदर ही अंदर कमजोर होता चला जाता है। इस से जितनी जल्दी छुटकारा मिल जाए, उतना ही अच्छा है।

तुम्हें याद है कि नवम्बर की इन्द्रधनुष में हमने एक चित्र रंगने के लिये दिया था? हमें बहुत सारे बच्चों ने इसे भर कर भेजा जिसमें से हमने लकी ड्रॉ से तीन नाम चुनें हैं। इन्हें अगले 6 महीनों की इन्द्रधनुष मुफ्त भेजी जायेगी।

- **जयन्त कश्यप**, गांव सेर-चिराग, डाक घर जौणाजी तह0 व जिला सोलन
- **अंजना कुमारी**, गांव सेर चिराग, डाक घर जौणाजी, तह0 व जिला सोलन
- **कौस्तुभ शमशेरी**, बी-7 सेक्टर -1, लेन -2 न्यू शिमला, शिमला

गलतियां निकालो प्रतियोगिता!

हम चाहते तो हैं कि इन्द्रधनुष में गलतियां न हों, पर क्या करें, कुछ न कुछ छूट ही जाती हैं। इस अंक से हम इन्द्रधनुष के अगले किसी भी एक अंक में सबसे ज्यादा गलतियां निकाल कर भेजने वालों को ईनाम देंगे। उन्हें अगले 6 महीने की इन्द्रधनुष मुफ्त भेजी जाएगी। अगर ऐसे बहुत से पत्र हमें मिलते हैं तो हम लकी ड्रा से विजेताओं के नाम चुनेंगे।
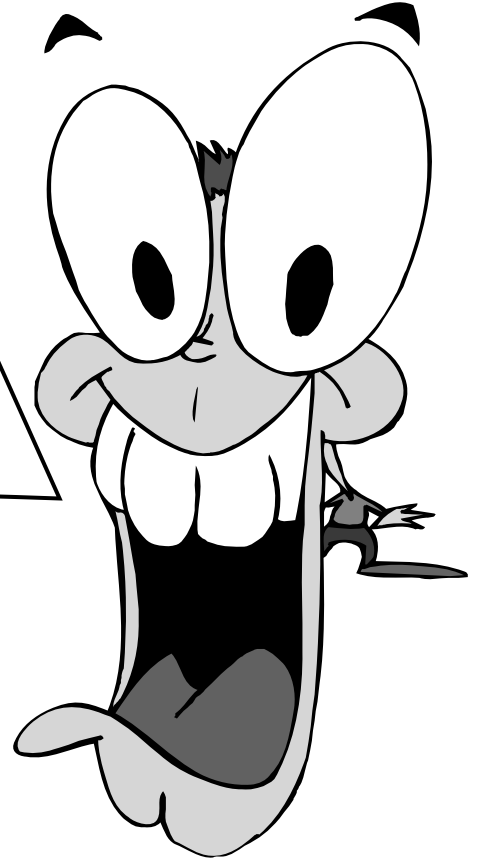
''देखो बेटा! आ-आ करो जिससे डॉक्टर साहब अपनी उंगली तुम्हारे मुंह से निकाल लें।''

■ ■ ■

डॉक्टर बगल के बच्चे को अच्छा बनना सिखा रहा था। उसने पूछा, ''श्याम, हमें क्या करना चाहिये जिससे हम स्वर्ग जा सकें?''
''मर जाएं,'' बच्चे का जवाब था।

''ठीक,'' डॉक्टर ने पूछा, ''मरने से पहले क्या करना चाहिये?''
''आपको बुलाना चाहिये।''

चाचा भिक्कन मुन्नू को पढ़ा रहे थे और उसके कान गरम कर रहे थे। मुन्नू ने पूछा, ''एक सवाल मेरा बताइये चाचा। वह क्या है जिससे बाल बनाये जाते हैं, जिस पर चढ़ा जाता है और जिससे बच्चे को दूध पिलाया जाता है।''
चाचा उखड़ गये। कुछ देर सोचकर वे बोले, ''भई, हार मान गये, तुम बताओ।''
''कंघा, कार और बोतल।''

■ ■ ■

एक बार की बात है, एक वृद्ध सज्जन सड़क पर जाते-जाते बेसुध हो कर गिर पड़े। देखते ही देखते ही भीड़ इकट्ठी हो गई। कोई पानी के छींटे मारने की राय देने लगा, कोई जूता सुंघाने को कहने लगा। एक युवती बार-बार चिल्ला रही थी-''अरे, इस वृद्ध को जल्दी से एक पाव जलेबी दूध में डालकर खिलाओ।'' पर उस बेचारी की आवाज किसी ने न सुनी।

■ ■ ■

कुछ देर तक वृद्ध बेसुधी में ही सब सुनता रहा, अन्त में थोड़ी आंखें खोल-कर बोला- ''अरे सब अपनी ही बकवास में मस्त हैं, कोई उस युवती की भी तो सुनो।''

■ ■ ■

गांधी जी से पत्रों में कभी-कभी बड़े विचित्र और बचकाने प्रश्न पूछे जाते थे। एक पत्र में किसी ने पूछा था, ''हम तीन मन की देह लेकर धरती पर चलते हैं और बहुत-सी चीटियां कुचल जाती हैं। यह हिंसा कैसे रुक सकती है?''
सरदार पटेल वहीं पास बैठे थे। उन्होंने छूटते ही गांधी जी से कहा, ''इसे लिख दीजिये कि पैर सिर पर रखकर चलें।''

■ ■ ■

अध्यापक अस्त्र-शस्त्र के बारे में समझाते हुए बोले, ''अस्त्र उसे कहते हैं जो फेंककर मारा जाये, और शस्त्र वह होता है जिसे हाथ में लिये-लिये ही चोट की जाये ।''
''तो, श्रीमान, जूते को अस्त्र कहेंगे या शस्त्र?'' एक विद्यार्थी ने जिज्ञासा प्रकट की।

■ ■ ■

'' क्या तुम्हें पता है कि घास से मक्खन कैसे बनाया जाता है?''
शिवओम दस मिनट तक सोचता रहा, फिर हार मान ली।
''क्यों, बड़ा आसान है। इसके लिये एक गाय और एक बिलोन की मथानी चाहिये।''

■ ■ ■

एक सेल्समैन एक महिला के यहां कुछ सामान बेचने गया। उसे देखकर उस महिला के कुत्ते ने गर्राना और भौंकना शुरू कर दिया। महिला चट बाहर आयी और उससे बोली, ''इसके गुर्राने और भौंकने से डरना मत। तुम तो यह कहावत जानते ही होगे कि जो भौंकता है, वह काटता नहीं।''

सहमे हुए सेल्समैन ने उत्तर दिया,'' यह तो ठीक है कि यह कहावत आपको और मुझे मालूम है, पर प्रश्न तो यह है कि यह कुत्ता भी उसे जानता है या नहीं।''

■ ■ ■

''लीजिये साहब,'' सेल्समैन ने कहा, ''यह जूता खरीदिये। एकदम नफीस चीज़ है, ए वन। और सा'ब गारंटी लीजिये, जिन्दगी भर चलेगा यह जूता, बिल्कुल टूटने का नहीं। बंधवा दूं न ! . . . . लो भई गोविन्द, बांधकर सा'ब की गाड़ी में पहुंचाओ इसे। . . . . अच्छा सा'ब दुबारा जूता खरीदना हो, तब फिर यहीं पधारें।''

■ ■ ■

एक नवाब साहब ने एक लड़की के पिता को बुलवाया और कहा. . . .''तुम अपनी लड़की का विवाह मेरे लड़के से कर दो, तो उसके वजन के बराबर सोना तुम्हें दे सकता हूं।''

''मुझे कुछ समय की मोहलत दीजिये,'' पिता ने कहा।
''क्यों, क्या सोचने के लिये?''
''कैसे?'' युवक ने पूछा।
''नहीं, उसे मोटी करने के लिये।''

■ ■ ■

भिखारी- आपकी पड़ोसिन ने मुझे दो रोटियां दी है। माई, आप भी कुछ दें। भगवान् आपका भला करे!

गृहणी -हां हां, मैं तुम्हें चूरन की गोली देती हूं।

■ ■ ■

''तुम्हें मेरे बाल सस्ते में काटने चाहियें क्योंकि वे नहीं के बराबर हैं।''
''ओहो! आप समझे नहीं। आपके साथ मैं बाल काटने के दाम कब ले रहा हूं, ये तो बाल ढूंढने के पैसे हैं।''

■ ■ ■

''मैं जरा पांच मिनट के लिये बाहर जा रही हूं। चूल्हे पर दाल चढ़ी है। हर आधे घण्टे के बाद उसे चलाते रहना।''

गोलू के कारनामे

रामबाबू
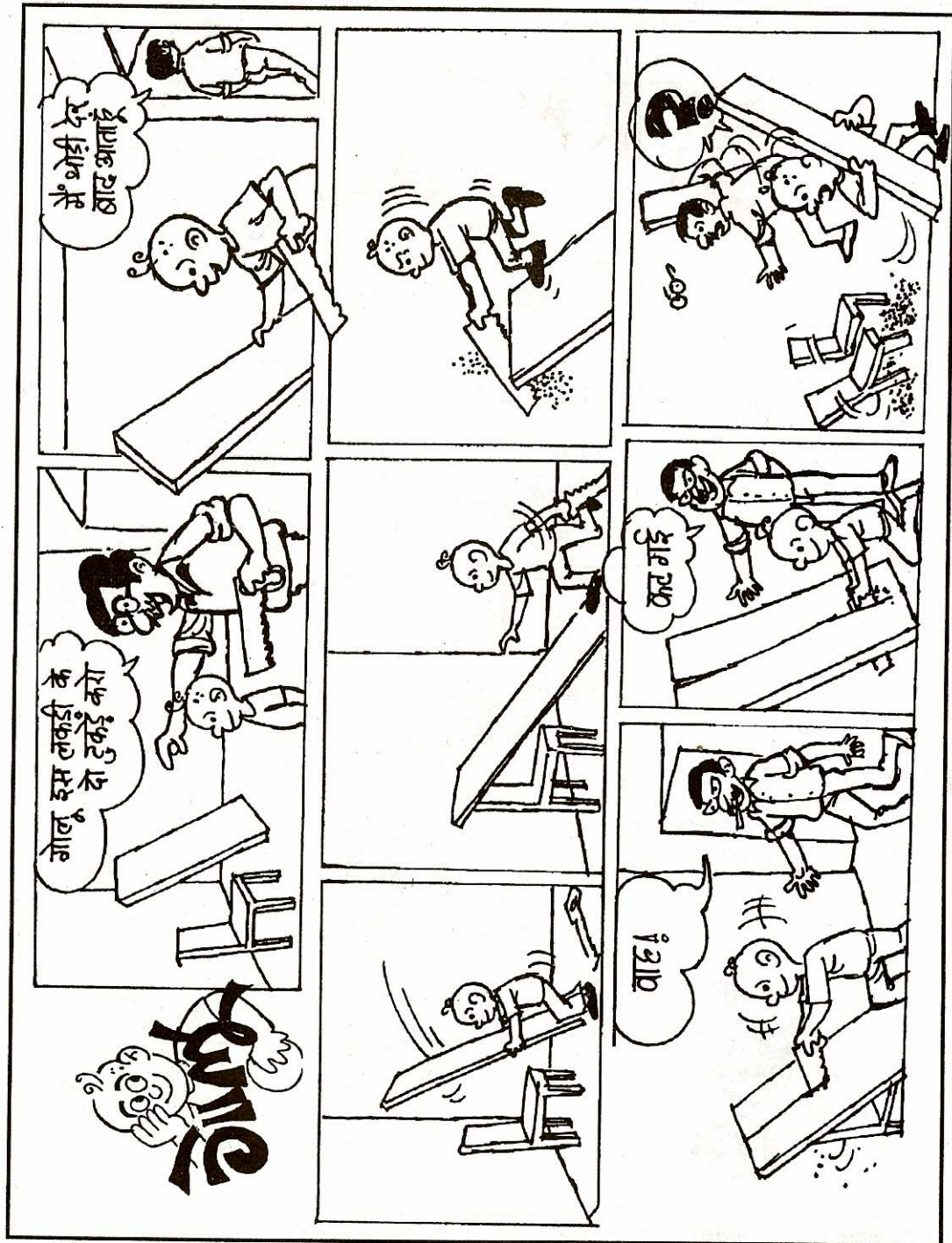
– अनुराग ट्रस्ट से साभार
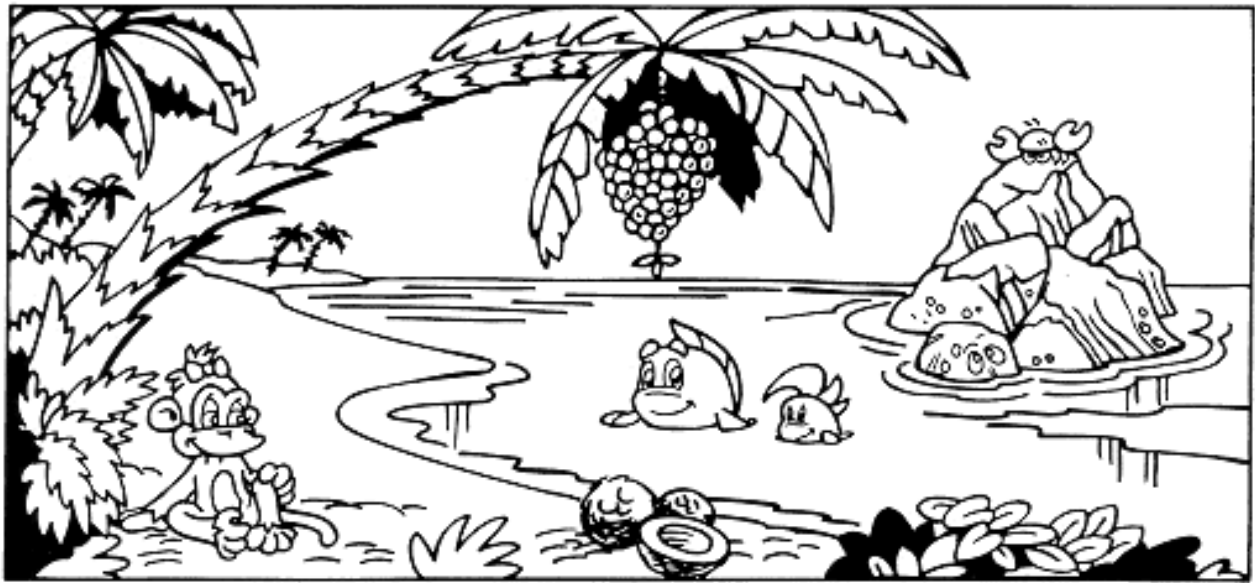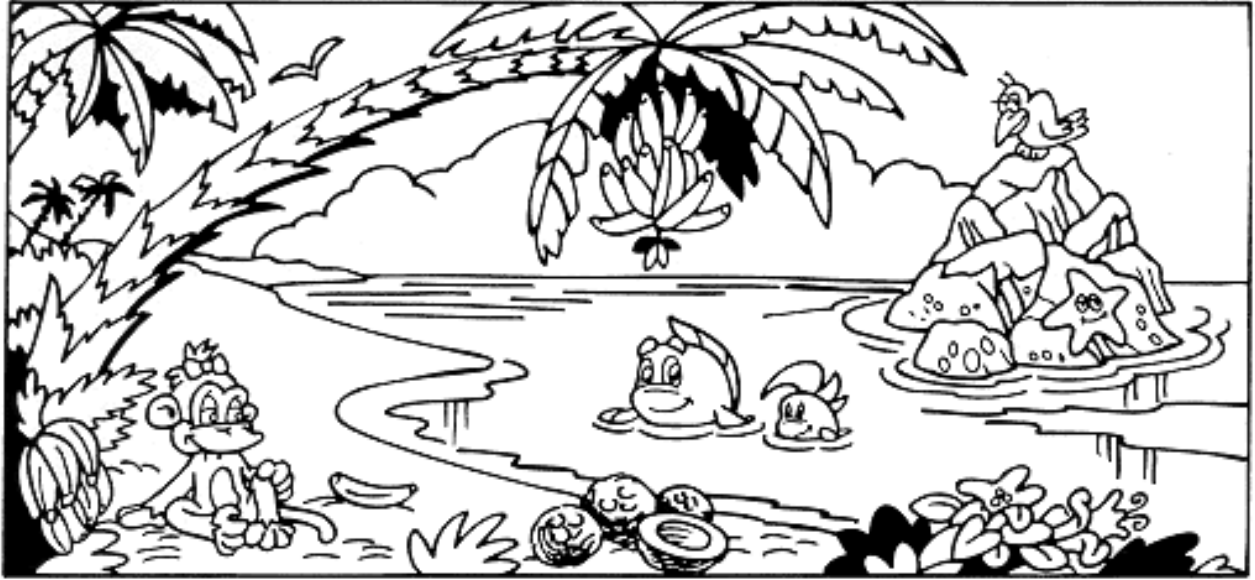
अन्तर ढूंढो

ऊपर और नीचे दिए गये चित्रों में 15 अन्तर हैं। इन्हें ढूंढ कर निकालो।

ऊपर दिये हर चित्र में एक जीव ने अपने आपको अपने आसपास के वातावरण में छिपाया हुआ है। शिकारी जीवों से अपनी रक्षा करने का यह एक बहुत ही कारगर तरीका है और इसे छद्मावरण या camouflage (कैमोफ्लाज) कहा जाता है। क्या तुम इन जीवों को पहचान सकते हो? लीफ मिमिक कीट, रॉक टारमिगन चूजा, गिरगिट, प्रेइंग मैनटिस नामक कीट, वाकिंग स्टिक कीट, एक तरह का मेंढक, पॉपलर के पेड़ पर रहने वाले हॉक मॉथ का कैटरपिलर